अध्याय 16

यीशु का पुनरुत्थान

कौन कल्पना कर सकता है कि यीशु के दफनाए जाने और पुनरुत्थान के बीच के घण्टों में प्रेरितों का जीवन कैसा होगा? बाइबल समय के उस काल के दौरान की उनकी भावनाओं या गतिविधियों के बारे में कुछ नहीं बताती। मरकुस के पाठकों को केवल इतना बताया गया है कि लूका 23:55, 56 में बताई गई ''स्त्रियों'' ने सुगंधित वस्तुओं और इत्र तैयार किया और ''आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।'' यह मानना उपयुक्त है कि मसीह के विश्वासी कहीं पर इकट्ठे होकर शोक में डूबे हुए थे। मरकुस 16:10 मरियम को यीशु को देख लेने के बाद चेलों के पास जाते हुए दिखाता है, ''जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे।'' लूका 24:9 संकेत देता है कि स्त्रियां ''उन ग्यारहों को और अन्य सब को'' एक जगह मिलने गई।

''सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर'' (16:1-4)[1]

मरकुस सब्त के दिन को छोड़ देता है और कहानी को सप्ताह के पहले दिन से आगे बढ़ाता है:

[1]जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं कि आकर उस पर मलें। [2]सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं, [3]और आपस में कहती थीं, ''हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?'' [4]जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है - वह बहुत ही बड़ा था।

आयत 1. उस दिन सुबह **जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी** सुबह-सुबह यीशु के शव पर लेप लगाने के लिए गईं। दूसरे चेले अभी अपने शोक की बातें ही कर रहे होंगे या अभी इधर उधर जाने ही लगे होंगे परन्तु इन स्त्रियों में मसीह में विश्वासी बने रहने को दिखाना जारी रखा। उन्होंने कब्र में जाकर **उस पर मलने** के इरादे से **सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं**।

कब्र पर जाने वाली स्त्रियों की मुख्य दिलचस्पी यीशु के शव पर लेप लगाना था परन्तु उनका विश्वास शीघ्र ही जी उठे प्रभु, अर्थात देहधारी उद्धारकर्त्ता में बदल जाना था (2 कुरि. 5:16; देखें 1 यूहन्ना 3:2)। उन्होंने शीघ्र ही उसे उसी देह में देखना था जिसमें उन्होंने उसे अंतिम बार अपने साथ होने पर देखा था। बाद में उसने थोमा से कहना था, ''... अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल'' (यूहन्ना 20:27)। अपने प्रेरितों को विश्वास दिलाने के लिए कि उसकी देखी वही थी जो क्रूस से पहले थी, शायद यीशु ने लूका 24:42, 43 में भूनी हुई मछली भी खाई (देखें यूहन्ना 21:5-13)।[2] वह पहले जैसा भी दिखता था, उसकी स्वर्गीय देह अब वैसी ही है, यानी वह देह जिसे हम एक दिन देखेंगे, निश्चित रूप में उस देह से जो उसकी मांस की काया में थी अलग है।[3]

आयत 2. बड़े भोर जब सूरज निकला ही था तब की बात है। KJV में कहा गया था

कि ''सूर्य उदय होने पर'' और NIV में है कि ''सूर्योदय के तुरन्त बाद।'' दिन का नाम मरकुस 16:1, 2 में बताया गया है: ''जब सब्त का दिन बीत गया'' ... **सप्ताह के पहले दिन** यानी रविवार वाले दिन। मत्ती में ''सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही'' है (मत्ती 28:1), जबकि यूहन्ना में ''सप्ताह के पहले दिन ..., भोर को अंधेरा रहते ही'' है (यूहन्ना 20:1)।

ये विवरण एक-दूसरे से टकराते नहीं हैं। विरोधाभास केवल तब होता है जब एक बात दूसरी बातों के साथ मेल न खाती हो। यह आसानी से देखा गया है कि ये सभी बातें सही हो सकती हैं। ये स्त्रियां दिन चढ़ने से पहले बैतनिय्याह से निकल गई होंगी। हो सकता है कि उन्होंने रुककर रास्ते में सुगंधित वस्तुएं लीं और फिर नगर के उत्तरी छोर की ओर चल पड़ीं। वे लगभग दो मील चली होंगी। जहां तक समय की बात है सूर्योदय तक वे यरूशलेम में पहुंच चुकी होंगी।

आयतें 3, 4. स्त्रियों के कब्र तक पहुंचने तक एक और चिंता सामने आई। वे एक दूसरी से बातें करने लगीं, ''**हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?**'' (16:3)। कब्र देखे हुए होने के कारण, उन्हें पता था कि पत्थर **बहुत ही बड़ा** था (16:4)। साफ़ है कि उन्होंने पत्थर को हटाने के प्रबन्ध के किए जाने की बात पर विचार नहीं किया था जिससे वे यीशु की देह के पास जा सकतीं, परन्तु इस बात ने उन्हें बहुत देर तक परेशान नहीं किया क्योंकि **जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है** (16:4)।

16:3, 4 का स्पष्टीकरण मत्ती 28:2 में यह दिया गया है कि एक स्वर्गदूत और भूकम्प के कारण वह बड़ा पत्थर लुढ़क गया। यह ''भूकम्प'' आकस्मिक प्राकृतिक घटना से बढ़कर था क्योंकि इसका समय ईश्वरीय हस्तक्षेप का संकेत देता है। या तो स्वर्गदूत ने भूकम्प लाया ताकि पत्थर लुढ़क सके, या बड़ा पत्थर हटाने की स्वर्गदूत की कार्यवाही से भूकम्प आ गया।

कब्र पर स्त्रियां (16:5-8)[4]

[5]कब्र के भीतर जाकर उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं। [6]उसने उनसे कहा, ''चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। [7]परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा। जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।'' [8]और वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कंपकंपी और घबराहट उन पर छा गई थी; और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं।

आयत 5. उन स्त्रियों ने **कब्र के भीतर जाकर एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने हुए** उस जगह के **दाहिनी ओर बैठे देखा**, जहां यीशु का शव रखा गया था (देखें लूका 24:3)। लूका 24:4 संकेत देता है कि ''दो पुरुष'' थे और यूहन्ना 20:12 कहता है कि मरियम ने ''उस उज्ज्वल कपड़े पहने हुए दो स्वर्गदूतों को ... [शव रखे जाने के स्थान पर] एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने देखा।'' विरोधाभास का दावा करने के बजाय हमें यह देखना चाहिए कि ''सुसमाचार के चारों विवरणों का उत्तर सुसमाचार के विवरणों की स्वतन्त्रता को बढ़ा देता है और यह दिखाता है कि कहानी 'चतुराई से घड़ी हुई कहानी' नहीं थी (देखें 2 पतरस 1:16)।''[5]

यह अलग - अलग विवरण आपस में टकराते नहीं हैं बल्कि यह इस बात को स्पष्ट करते हैं कि ये ''पुरुष कौन थे'' और वास्तव में कितने जन थे। मरकुस का विवरण यह स्पष्ट करता है कि स्त्रियों ने एक व्यक्ति को ''दाहिनी ओर बैठे देखा'' और साफ़ है कि उसी ने उनके साथ बात की। दूसरे व्यक्ति के साथ वह उनके साथ खड़ा होने के लिए गया और उन्हें उसके बारे में जो कुछ हुआ था बड़े प्रेम से बताया।

श्वेत वस्त्र लूका 24:4 में बताए गए ''झलकते वस्त्र'' के जैसा ही है। कब्र से पत्थर को हटाने वाले स्वर्गदूत का ''रूप बिजली का सा'' और ''उसका वस्त्र पाले के समान उज्ज्वल था'' (मत्ती 28:3)। इन दोनों के लिबास से यह संकेत मिलता है कि वे दोनों परमेश्वर के स्वर्गदूत थे। मरकुस में चाहे ''जवान'' को स्वर्गदूत नहीं बताया गया परन्तु जो जानकारी उसने यह स्त्रियों को दी, उससे स्पष्ट है कि वह कोई मनुष्य नहीं था।

आयत 6. बात करने वाले स्वर्गदूत ने माना कि स्त्रियां **यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती** थीं और फिर इशारा करते हुए उसने कहा, **यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था**; परन्तु उसने घोषणा की कि ''**वह जी उठा है, यहाँ नहीं है।**'' इसके अलावा उसने स्त्रियों से कहा, **चकित मत हो**। यह यूनानी शब्द ἐκθαμβέω (*ekthambeō*) का अनुवाद अलग-अलग रूप में आश्चर्यचकित (NASB; NIV); ''डर गईं'' (NKJV; NRSV); और (KJV) किया गया है। 14:33 में यह कहने के लिए कि प्रार्थना करने के लिए बाग में जाने पर यीशु ''व्याकुल'' था, इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है। स्वर्गदूत नहीं चाहता था कि स्त्रियां इतनी आश्चर्यचकित या भयभीत हो जाएं कि उन्हें इस बड़ी सच्चाई पर यकीन न हो कि मसीह जी उठा है। मत्ती 28:8 कहता है कि ''वे बड़े भय और आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौट'' गईं। भय, आनन्द, आश्चर्यचकित, भयभीत होने की ये सभी प्रतिक्रियाएं ऐसे ईश्वरीय क्षण में हो सकती हैं।

आयत 7. फिर उसने उनसे कहा, **तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा। जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।**'' स्त्रियों से बात करने वाले स्वर्गदूत को यह पता था कि यीशु ने गलील में अपने चेलों से मुलाकात के बारे में क्या कहा (देखें मत्ती 26:32; मरकुस 14:28) और स्पष्टतया उसे उनसे कही यीशु की हर बात का भी पता था। क्या इससे यह पता चलता है कि स्वर्गदूत प्रभु के चारों ओर हर समय मंडराते रहते थे? हम जानते हैं कि उसके उपवास के चालीस दिनों के बाद वे जंगल में उसके साथ थे (मत्ती 4:11; मरकुस 1:13) और बाग में उसे बल देते थे (लूका 22:43)। क्या वे केवल तभी अलग हुए जब यीशु क्रूस पर था (देखें मत्ती 27:46)? यदि पिता की इच्छा होती तो यीशु अपने पकड़वाए जाने के समय ''स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक'' मंगवा सकता था (देखें मत्ती 26:53, 54)।

आयत 8. स्त्रियों के सम्बन्ध में केवल यही स्वाभाविक लगता है कि ऐसे किसी व्यक्ति को देखकर वे डर गई होंगी। स्वर्गदूत के उनसे बात करने के बाद **वे निकलकर कब्र से भाग गईं**। मरकुस ने कहा है कि **कँपकँपी और घबराहट उन पर छा गई थी; ... क्योंकि डरती** [φοβέω, *phobeō*[6]] **थीं**। मत्ती 28:3, 4 में कहा गया है कि स्वर्गदूतों को देखने वाले पहरेदार ''भय से कांप उठे और मृतक समान हो गए,'' जो इस बात को दिखाता है कि ये

प्रशिक्षित सिपाही भी स्वर्गदूतों को देखकर डर गए थे। ये पहरेदार स्त्रियों के पहुंचने से पहले भाग गए होंगे।

चाहे स्त्रियों से बात करने वाला स्वर्गदूत भयभीत कर देने वाला था, परन्तु उन्हें उसका सलाम स्नेहपूर्ण और विनम्र था। उसे उनके डर का पता था जिस कारण उसने तसल्ली देने वाले शब्द कहे, ''भयभीत मत हो'' (16:6; NKJV)। डरी हुई स्त्रियों ने अपने आपको सम्भाला और स्वर्गदूत (या स्वर्गदूतों; लूका 24:4) के सामने झुक गईं। फिर उनसे चौंकाने वाला प्रश्न पूछा गया: ''तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो'' (लूका 24:5)।

यह बताए जाने के बाद कि यीशु जी उठा है, स्त्रियों से कहा गया कि ''उसके चेलों और पतरस से कहो'' (मरकुस 16:7)। इसका अर्थ यह हुआ कि पुनरुत्थान की सबसे पहले घोषणा करने वाली स्त्रियां थीं। पहले तो **उन्होंने किसी से कुछ न कहा**, ''क्योंकि डरती थीं।'' परन्तु फिर उन्होंने स्वर्गदूत की आज्ञा मानी और ''उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं'' (मत्ती 28:8)।

यीशु ने अपने जी उठने के बाद उसे सबसे पहले देखने की आशीष इन स्त्रियों को दी। यीशु ने उन पर कितना भरोसा किया! यहूदी अदालत में किसी महिला की गवाही को लगभग बेकार ही माना जाता था, परन्तु यीशु ने उस सबके लिए, जो कब्र पर हुआ था, लोगों में सबसे पहले गवाह बनने के लिए, इन स्त्रियों को बुलाया। उसने उन्हें बड़ा सम्मान दिया। बाद में प्रेरितों को उन स्त्रियों के समाचार पर कि उन्होंने प्रभु को देखा है, विश्वास न करने के लिए प्रेरितों पर ''उलाहना'' दिया जाना था (मरकुस 16:14)।

पतरस को स्त्रियों से स्वर्गदूत का संदेश पाकर कितना अच्छा लगा होगा! प्रेरितों ने पहले चाहे इस समाचार पर विश्वास नहीं किया (लूका 24:11), परन्तु पतरस ने जाकर खुद देखने का सही निर्णय लिया (लूका 24:12)। पतरस से तेज भागते हुए यूहन्ना भी उससे आगे निकलकर कब्र पर पहुंच गया (यूहन्ना 20:4)। सम्भवतया इस समय पतरस थोड़ा मायूस था, क्योंकि वह दो दिन पहले रो रहा था (देखें मरकुस 14:72)। यीशु विशेषकर पतरस को बताना चाह रहा था कि वह जीवित है ताकि उसे फिर से उम्मीद मिल सके और उसका विश्वास मज़बूत हो। इससे पतरस को क्षमा की सम्भावना मिल जानी थी। उसे यह पता होना आवश्यक था कि उसका पाप बेबदल नहीं था। यदि पतरस के लिए गिर जाने पर आशा थी, तो हम में से किसी के लिए भी आशा है। पतरस ने प्रचार करते हुए कितनी ही बार इस महत्वपूर्ण बात को रखा होगा! पौलुस भी बड़े आनन्द से यही दावा करता होगा, चाहे वह अपने आपको हमेशा ''सबसे बड़ा'' पापी मानता था (देखें 1 तीमु. 1:15)।

खाली कब्र की गवाही (मरकुस 16:6; यूहन्ना 20:6-8) यीशु के जी उठने का ज़बर्दस्त प्रमाण है। खाली कब्र बड़े लम्बे समय से इस बात की गवाह है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा। जी उठने से यीशु परमेश्वर का पुत्र साबित हुआ। रोमियों 1:4 इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु ''पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।''

यदि पुनरुत्थान नहीं हुआ, तो यह प्रश्न बनता है, ''शव कौन ले गया?'' यदि यीशु का शव निकाल लिया गया होता, तो सम्भवतया मलमल का कपड़ा वहां नहीं रहने दिया जाना था।

निश्चय ही शव को उठाने वालों के पास इसे खोलने का समय नहीं होना था (देखें यूहन्ना 20:7)। यदि यीशु के शत्रु उसका शव ले गए होते तो उन्होंने उसका प्रचार किए जाने को तुरन्त रोक देना था। यदि चेले ले गए होते (देखें मत्ती 28:13), तो उन्होंने बाद के वर्षों में अपनी जान बचाने के लिए उसे देखने के अपने दावे को नकारने को मजबूर किए जाने पर अपने विश्वास के लिए मर जाने को तैयार होना था। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''पुनरुत्थान का कहीं बढ़कर अच्छा प्रमाण मसीही कलीसिया का अस्तित्व है। दु:खी और मायूस पुरुषों और स्त्रियों को आनन्द से चमकते और साहस से भरे पुरुषों और स्त्रियों में कोई और चीज़ नहीं बदल सकती।''[7] यह बदलाव तीन दिनों के अंदर-अंदर आया, जब डरे हुए चेले निर्भय होकर सुसमाचार की घोषणा करने वाले लोग बन गए। यदि यह पुनरुत्थान के कारण हुआ तो यह इतना बड़ा बदलाव विश्वास किए जाने से कहीं आगे बढ़कर है।

विश्वासी कलीसिया उस बड़े विश्वास को कि यीशु मुर्दों में से जी उठा, सुनाती आ रही है। बिना इस विश्वास के कि यीशु मरने के बाद फिर से जी उठा, उसी नगर में जहां पचास दिन पहले उसकी मृत्यु हुई थी, इतनी बड़ी कलीसिया के होने की बात को समझा पाना असम्भव है।

प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में प्रेरित विश्वास और दलेरी के साथ पुनरुत्थान का प्रचार कर पाए। प्रेरितों के काम में ''गवाह'' (μάρτυς, *martus*) शब्द का अर्थ न केवल वह जो यीशु के लिए बोलता है बल्कि वह है ''जो उसकी गवाही देता है जिसे वह अपने निजी अनुभव से जानता है।'' उदाहरण के लिए मत्तियाह में प्रेरित बनने की योग्यताएं थीं क्योंकि वह ''यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके ऊपर उठाए जाने के दिन तक'' यीशु और चेलों के ''साथ'' रहा था (प्रेरितों 1:21, 22)।

पौलुस ने कई जगहों पर यह दिखाते हुए प्रचार किया कि पवित्र शास्त्र में मसीह की भविष्यद्वाणी की गई। उसका संदेश विशेष रूप में इसलिए सामर्थ से भरा था क्योंकि एक अर्थ में, वह यह कह सकता था, ''मैंने जी उठे प्रभु को देखा है, परन्तु मैं उसे देखने वालों में अंतिम हूं क्योंकि मैं अंतिम प्रेरित हूं।''[8]

यीशु के दर्शन (16:9-14)

पुनरुत्थान के बाद के यीशु के ''चालीस दिन तक'' (प्रेरितों 1:3) दर्शन सुसमाचार के विवरणों तथा 1 कुरिन्थियों 15:1-8 में दर्ज किए गए हैं। इन दर्शनों के सम्बन्ध में केवल पहले दिन यानी जिस दिन वह जी उठा था (रविवार) और अगले रविवार का उल्लेख है (देखें यूहन्ना 20)। ''पांच सौ से अधिक भाइयों को'' दर्शन तब दिया गया होगा, जब यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद पृथ्वी पर रहने के समय के अंतिम भाग में अपने चेलों से गलील में मिला होगा (1 कुरि. 15:6; देखें मत्ती 28:16-20)। पतरस को विशेष दर्शन यीशु के पुनरुत्थान के दिन के अंतिम भाग में दिया होगा, क्योंकि इसका उल्लेख उस रविवार की शाम जमा हुए लोगों के लिए किया गया है (लूका 24:34)। याकूब को भी उसने पहले रविवार को दर्शन दिया होगा, परन्तु बाइबल में समय नहीं बताया गया (1 कुरि. 15:7)।

पुनरुत्थान के बाद के मसीह के चाली दिनों के दर्शनों को, जो नये नियम में दर्ज हैं, इस प्रकार से क्रमबद्ध किया जा सकता है:

मरियम मगदलीनी को (मरकुस 16:9-11; यूहन्ना 20:11-18)।
दूसरी स्त्रियों को (मत्ती 28:9, 10)।
पतरस को (लूका 24:34; देखें 1 कुरि. 15:5)।
इम्माउस की ओर जाते हुए दो चेलों को (मरकुस 16:12, 13; लूका 24:13-32)।
अटारी वाले कमरे में ग्यारह को (जिनमें थोमा नहीं था) (मरकुस 16:14; लूका 24:36-43; यूहन्ना 20:19, 20)।
ग्यारहों को जब थोमा उनके साथ था (यूहन्ना 20:26-29; देखें 1 कुरि. 15:5)।
सात चेलों को जब वे गलील की झील या तिबिरियास झील में मछलियां पकड़ रहे थे (यूहन्ना 21:1-23)।
पांच सौ से अधिक भाइयों को जिसमें वे ग्यारह भी थे (मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:15-18; 1 कुरि. 15:6)।
याकूब को[9] (1 कुरि. 15:7)।
जैतून पहाड़ पर ग्यारह को (मरकुस 16:19; लूका 24:44-53; देखें प्रेरितों 1:3-12; 1 कुरि. 15:7)।

मरियम मगदलीनी को (16:9-11)[10]

[9]सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। [10]उसने जाकर यीशु के साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। [11]उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, प्रतीति न की।[11]

आयत 9. मरियम मगदलीनी उन महिलाओं में से थी जो यीशु के पीछे चलती थीं। स्पष्टतया यह महिला अनुयायी यीशु की केवल शिष्या बनना चाहती थी। याकूब और यूहन्ना जैसे प्रेरित यीशु के राज्य में उसके साथ हाकिम या सेनापति बनना चाहते थे; उन्हें यीशु के अधीन रहते हुए नेतृत्व के पद चाहिए थे। इन स्त्रियों को यीशु की केवल सेविकाओं के रूप में दिखाया गया है।

> यीशु के लिए पुरुषों का लगाव उनकी अभिलाषा से मैला हो गया था। उनके सपने चूर-चूर होने पर वे भाग गए। ये स्त्रियां जिनका लगाव सेवा के कामों में दिखाया गया, टिकी रहीं। चाहे उन्हें भी यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की ईश्वरीय अनिवार्यता की समझ नहीं थी, परन्तु वे टिकी रहीं।[12]

मरियम प्रभु की बहुत आभारी थी और उसने बदले में अपने प्रेम को दिखाया।

वह जी उठ कर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद **सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही** उसे सबसे पहले उसी ने देखा (देखें 16:2)। यूहन्ना के विवरण में केवल मरियम के बारे में बताया गया है, उसमें दूसरी किसी भी स्त्री का उल्लेख नहीं है (यूहन्ना 20:1-18)।

आयत 10. कब्र पर जाने के बाद मरियम चेलों को वह सब जो उसने देखा था, बताने के

लिए भाग गई; और वह पतरस और यूहन्ना के बाद लौटी और उनके चले जाने के बाद पहुंची, जिस कारण वह कब्र पर अकेली थी। उसने दूसरी स्त्रियों के वहां रहते स्वर्गदूतों से समाचार नहीं सुना इस कारण वह रोती और विलाप करती हुई कब्र पर आई। तभी यीशु ने उसे दर्शन दिया (यूहन्ना 20:11-17)। पहले तो उसे लगा कि वह कोई माली है। यदि वह इस दर्शन की कल्पना कर रही होती, तो लगता है कि उसने मसीह को माली समझने के बजाय माली को मसीह समझ लेना था। यीशु को देखने के बाद मरियम ने तुरन्त चेलों के पास जाकर, उन्हें बताया कि क्या हुआ है। मरकुस कहता है कि **उसने जाकर यीशु के साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे** [जो उसने देखा था उसका]**, समाचार दिया।**

आयत 11. जब चेलों ने यीशु के पुनरुत्थान का समाचार सुना, **वह जीवित है और** [मरियम] **ने उसे देखा है, प्रतीति न की**। बाद में यीशु ने उनके अविश्वास के लिए उन्हें डांट लगाई। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी हुई थी, परन्तु इसके वास्तव में हो जाने तक उसके चेलों को उस सबको जो कहा गया था, समझना कठिन था। हमारी तरह ही इन चेलों को उन भविष्यद्वाणियों के जो उन्हें दी गई थीं पूरा होने से अच्छी तरह प्रयोग करना आवश्यक था। पवित्र शास्त्र में पूरी तस्वीर दिखा दिए जाने के बाद हमारे लिए इन महिमामय घटनाओं को पीछे की ओर देखकर उनके अर्थों को समझना आसान है।

इस तथ्य का कि मरियम में सात दुष्टात्माएं थीं, अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि उसका चरित्र उतना बुरा होगा जितना कुछ परम्पराओं में इसे दिखाया गया है। यह विचार कि वह लूका 7:37, 38 वाली पापिन थी, भी बिना प्रमाण के है। उसे सुधरी हुई वेश्या बनाकर परम्परा में उसके नाम को गलत ढंग से बदनाम किया गया है। बाइबल इस दावे का कोई सबूत नहीं देती। जो भी हो वह हमारे प्रभु की एक पश्चात्तापी और विश्वासी अनुयायी थी और उसने उसे परमेश्वर के पुत्र के पुनरुत्थान की पहली गवाह होने का सम्मान दिया।[13]

रोमी जगत के लिए लिखने के मरकुस के उद्देश्य में स्त्री की गवाही को विशेष महत्व देने के लिए यह बात कही गई हो सकती है। यूहन्ना 20 के साथ मेल खाते हुए सुसमाचार का यह विवरण यह दिखाता है कि यीशु ने पहले एक स्त्री को दर्शन दिया और दूसरों के लिए उसकी गवाही को महत्व दिया। यहां पर पुरुष चेलों (प्रेरितों) ने स्त्रियों की बात की ''प्रतीति न की'' परन्तु बाद में उन्होंने यह ससमाचार देने के लिए स्त्रियों को आदर देना था।

दो चेले (16:12, 13)[14]

[12]इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। [13]उन्होंने भी जाकर दूसरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनकी भी प्रतीति न की।

आयत 12. फिर यीशु **गांव की ओर जा रहे** दो जनों को दिखाई दिया। लूका 24:13-16 का समानांतर वचन यह कहता है कि यीशु उनके साथ हो लिया जब वे ''इम्माऊस नामक एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था,'' और इन दोनों यात्रियों की ''आंखें ऐसी बन्द कर दी गईं थी कि उसे पहचान न सके।'' बाद में जब यीशु ने उनकी रोटी पर आशीष दी तो ''उनकी आंखें खुल गई; और उन्होंने उसे पहचान लिया'' परन्तु फिर ''वह

उनकी आंखों से छिप गया'' (लूका 24:30, 31)।

इस घटना में तीन आश्चर्यकर्म हुए: चेलों की आंखें बंद हो जाना जिससे वे यीशु को पहचान नहीं पाए, उनकी आंखें खुल जाना और यीशु का अलोप हो जाना। यीशु किसी अलग प्रकार की देह में दिखाई दिया होगा या उसने चेलों की आंखों पर पर्दा डाल दिया था। एक दिलचस्प जानकारी जो इस विवरण के लिए विशेष है, यह बात है कि मसीह ने इन चेलों को **दूसरे रूप में दिखाई दिया**। NKJV में कहा गया है कि ''उनकी नज़र बांध दी गई थी।'' परन्तु आश्चर्यकर्म हुआ था, जिस कारण ये दोनों यीशु को पहचान नहीं पाए थे। अपने जी उठने के बाद प्रभु ने लोगों को उसे दो अलग-अलग प्रकार से देखने दिया होगा, परन्तु हम यह पक्का कह सकते हैं कि थोमा तथा अन्य प्रेरितों ने उसी देह को देखा होगा जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था (देखें यूहन्ना 20:24-29)।

आयत 13. जिस प्रकार से स्त्रियों ने यीशु के पुनरुत्थान की अपनी गवाही से चेलों को ''चकित'' कर दिया था (लूका 24:22-24), उसी प्रकार से इम्माऊस को जाने की इन यात्रियों कहानी पर विश्वास नहीं किया गया। इसी कारण यह सुझाव दिया गया है कि इन यात्रियों में से एक महिला थी यानी हो सकता हैं कि यह दो जन क्लियोपास और उसकी पत्नी हों (देखें लूका 24:18)। परन्तु बाइबल में हमें इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि यह विवाहित दम्पत्ति हों। यीशु ने इन यात्रियों को ''मूर्ख आदमी और विश्वास करने में धीमे'' कहा (लूका 24:25)।

स्पष्टतया और ढंगों से यीशु के पुनरुत्थान का समाचार हर जगह फैल गया था। ''पहरुओं में से कुछ ने ... पूरा हाल प्रधान याजकों को कह सुनाया'' (मत्ती 28:11)। इसका अर्थ यही होगा कि उन्होंने अपने बड़े अधिकारियों को स्वर्गदूतों, भूकम्प और कब्र से पत्थर के लुढ़कने का वर्णन किया। याजकों ने सिपाहियों को यह कहने के लिए घूस दी कि जब वे रात को सो रहे थे तो यीशु के चेले उसका शव चुरा ले गए। यही कहानी सुसमाचार के मत्ती के विवरण के लिखे जाने तक सब जगह सुनाई गई थी (देखें मत्ती 28:12-15)। यदि कब्र की रखवाली करने वाले सोए हुए थे तो उन्हें कैसे पता चला कि चेले यीशु का शव चुरा ले गए?

ग्यारहों को (16:14)[15]

[14]पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी।

आयत 14. यहां पर बताया गया पुनरुत्थान के बाद का दर्शन लूका 24:36-43 वाले विवरण से मिलता-जुलता है, परन्तु कम विवरण के साथ। इस अवसर पर यीशु **ग्यारहों को** तब दिखाई दिया **जब वे भोजन करने बैठे थे**। शायद यह साबित करने के लिए कि वह आत्मा नहीं है बल्कि अपनी पुरानी देह में जीवित है, उसने उनके साथ खाया। इस विचार का कि पुनरुत्थान के बाद उसकी देह बिल्कुल अलग थी, न तो बाइबल में कुछ कहा गया है और इसका समर्थन किया गया है।

यीशु अपनी भौतिक देह के साथ बंद कमरे में अचानक कैसे आ सकता था? इस प्रश्न के

उत्तर से एक और प्रश्न निकल सकता है कि क्या वह अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले बंद कमरे में आ जा सकता है ? जो व्यक्ति पानी पर चल सकता था, उसे दीवार में से जाने या बिना चले किसी कमरे में जाने में कोई समस्या नहीं होनी थी। लूका 24:39 में यीशु ने अपने प्रेरितों को उसकी देह को छूने को कहा और फिर यूहन्ना 20:27 में थोमा से उसे छूने को कहा। निश्चय ही यीशु की स्वर्गीय देह अब पृथ्वी पर की उसकी देह के जैसे नहीं है। अपने पुनरुत्थान के बाद वह स्वर्गारोहण के समय अपनी महिमायुक्त देह में चला गया होगा (देखें 1 कुरि. 15:45-49; 1 यूहन्ना 3:2)।

यह तथ्य कि चेलों ने अपनी आंखों के सिवाय किसी और पर विश्वास नहीं किया, यीशु के पुनरुत्थान की विश्वसनीयता को बढ़ा देता है। फिर भी उसके अनुयायी अपने **अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना** दिए जाने के योग्य थे **क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी**। इन लोगों ने अपने साथी चेलों (स्त्रियों) पर भरोसा नहीं किया जो उन्हें यह शुभ समाचार सुना रहे थे कि उन्होंने प्रभु को देखा है। कइयों ने शमौन पतरस द्वारा दिए गए प्रमाण पर भी संदेह किया होगा, क्योंकि लूका 24:34 की पुष्टि करने वाली बात यह है कि ''प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है।''

हम में से बहुतों को उन भली स्त्रियों के द्वारा जो बचपन में हमें संडे स्कूल में पढ़ाया करती हैं पहले दर्जे का विश्वास मिला। हमारा विश्वास आम तौर पर विश्वसनीय गवाहों की गवाही पर निर्भर हो सकता है। इस संसार में जिन अधिकतर बातों को हम जानते हैं वे उन ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में दूसरों द्वारा दिए गए प्रमाण पर आधारित होती हैं। जिन्हें हमने खुद नहीं देखा होता, परन्तु फिर भी हमें उनकी सच्चाई पर पूरा भरोसा होता है।

उसका ग्रेट कमीशन (16:15, 16)[16]

[15]और उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। [16]जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा.''

आयतें 15, 16. अपने चेलों से अपनी अंतिम बात में यीशु ने अपना ग्रेट कमीशन दिया। यह रूप मत्ती 28:16-20 वाला पहाड़ पर दिए संस्करण से थोड़ा अलग है। मत्ती में बताए गए शब्दों के अनुसार ''सब जातियों'' में विश्वासी या ''चेले'' बनाने की आज्ञा थी। ज़ोर उस सब को मानने पर था जिसकी यीशु ने आज्ञा दी थी। इस सब का समर्थन स्वर्ग और पृथ्वी दोनों जगह ''सारे अधिकार'' दिए गए के उसके दावे से था। हमारे लिए किसी ऐसे प्रभु की कल्पना करना कठिन है जिसके पास ''पूर्ण अधिकार के सारे अधिकार, और सम्पूर्ण शक्ति का सारा बल'' है, परन्तु जी उठे मसीह में यही है।[17]

ग्रेट कमीशन कैसे पूरा किया जाना था ? प्रेरितों का काम **सारे जगत में जाकर** हर किसी को **सुसमाचार प्रचार** करना था (16:15)।[18] इसके बाद उन्होंने उन्हें जिन्होंने विश्वास कर लेना था, बपतिस्मा देना था।[19]

अगले कामों में प्रभु की आज्ञा मानने से पहले चेला बनना आवश्यक था। यह सब

सुसमाचार की शिक्षा को ग्रहण करने, उस शिक्षा में दिए गए प्रमाण से विश्वास उत्पन्न होने और बपतिस्मा लेने से होता है। परमेश्वर की योजना के अनुसार विश्वास केवल दूसरों को ''मसीह का वचन'' सिखाने के द्वारा ही आ सकता है (रोमियों 10:17)।

सुसमाचार के अपने विवरण में यूहन्ना ने बताया कि परमेश्वर लोगों को कैसे अपनी ओर ''खींचता'' है। यह खींचा जाना हमारे सुनने और सीखने के द्वारा होता है न कि हमारे दिलों पर पवित्र आत्मा की सीधी कार्यवाही से (यूहन्ना 6:44, 45)। बपतिस्मे का दिखाई देने वाला कार्य चेला बनने की प्रक्रिया का भाग है। यीशु ने इसे एक विशेष स्थान पर रखा है। उसे किसी के प्रभु का विश्वासी चेला बनने के निर्णय के दिखाई देने वाले कार्य के महत्व का पता था।

जो लोग विश्वास करने का दावा करते हैं परन्तु बपतिस्मा लेने की आज्ञा को नहीं मानते, उन्होंने इस कमीशन की शर्तों को नहीं माना है। रोम के मसीही लोगों को पाप में वापस चले जाने से रोकने के लिए पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि बपतिस्मे में मसीह के साथ मिल जाने पर वे विश्वास और मन फिराव के द्वारा मर चुके थे। मसीह के नाम में बपतिस्मा लेकर व्यक्ति मसीही यानी मसीह का हो जाता है।

मत्ती 28:19 में चाहे दूसरों को चेले बनने पर बपतिस्मा देने की आज्ञा है, परन्तु मरकुस 16:16 बपतिस्मे को सुसमाचार के प्रचार का परिणाम और वह जवाब बताता है जो उद्धार की ओर ले जाता है यानी चेला **जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा**। संदेश को सुनने से विश्वास आता है और यह उसे चेला बनाता है, जो बपतिस्मा लेगा।

यीशु द्वारा दिए गए आदेशों को हर घटना में माना जाना आवश्यक है। पहले, परमेश्वर के वचन के प्रचार या सिखाए जाने से विश्वास उत्पन्न होता है; इसलिए जहां सुसमाचार का संदेश नहीं गया है, मसीही लोग वहां नहीं हो सकते। यह हमारे ऊपर सुसमाचार के संदेश को **सारी सृष्टि** में पहुंचाने की जिम्मेदारी डालता है (16:15)। यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को दी गई आज्ञा अपने आप में आज की कलीसिया पर लागू होती है। मत्ती में अपने ग्रेट कमीशन के संदर्भ में यीशु ने कहा, ''देखो में जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)। यीशु ने कहा कि विश्वास करने और बपतिस्मा लेने वाले हर किसी का उद्धार होगा; परन्तु उसने चेतावनी भी दी कि **जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा** (मरकुस 16:16)।

सारे संसार में प्रचार करने का अधिकार हमें प्रेरितों को दी गई इस आज्ञा से मिलता है। इससे यह अनुमान लगाना आवश्यक है कि प्रचार कलीसिया के द्वारा किया गया, जिसके अगुवे प्रेरित थे। प्रेरितों के काम में सुसमाचार के संदेश को संसार में ले जाया गया और यीशु के कमीशन यानी आज्ञा के जवाब में सुसमाचार सुनाने की उस पुस्तक में दर्ज गतिविधि आज की कलीसिया के लिए नमूना है। संक्षेप में, मरकुस 16:16 में, वही शिक्षा है जो प्रेरितों 2:38, रोमियों 6:4 और 1 पतरस 3:21 में है। बपतिस्मे को कभी भी पहले मिल चुके उद्धार की तस्वीर के रूप में नहीं दिखाया गया।

शायद सबसे मज़बूत वचन जो यह दिखाता है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है, वह 1 पतरस 3:20, 21 है। इस वचन में जिस ''रूप'' की चर्चा की गई है वह नूह का उद्धार है जो पानी के द्वारा हुआ। ''प्रतिरूप'' (प्रतीकात्मक रूप में रूप का पूरा होना) पानी में हमारा आज्ञापालन है जो ''अब [हमें] बचाता है।''

बिना किसी और कार्यवाही का उल्लेख किए उद्धार की बात कई जगह की गई है परन्तु वहां विश्वास करते रहने का संकेत है, जिसमें निश्चित तौर पर मन फिराव, यीशु के अंगीकार और उसमें बपतिस्मा लेने जैसी आज्ञाओं को मानना शामिल है। फिलिप्पी दारोगे ने सुसमाचार का संदेश सुना और फिर उसे बपतिस्मा दिया। जो कुछ अभी-अभी हुआ था उसका वर्णन करते हुए लूका ने कहा कि इस आदमी ने ''परमेश्वर पर विश्वास'' किया था (प्रेरितों 16:34)। विश्वास हो जाने या करने पर प्रेरितों के काम और कहीं पर भी, आवश्यक बताया गया है कि इस प्रक्रिया में बपतिस्मा शामिल हो। बाइबल साफ़ संकेत देती है कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह पर विश्वास करने वाले व्यक्ति के लिए वफ़ादार विश्वासी के रूप में पहचाना जाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

इस सच्चाई का एक उदाहरण प्रेरितों 19:1-6 में मिलता है जहां बारह जनों से यह पूछा गया कि जब उन्होंने विश्वास किया तो क्या उन्हें पवित्र आत्मा मिला था। पौलुस को पता था कि वास्तविक चेला होने के लिए डुबकी का होना और दान के रूप में पवित्र आत्मा का मिलना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38)। इसी कारण जब उन्होंने जवाब न में दिया, तो उसे यह पता था कि उनके बपतिस्मे में कोई खामी है। उसने उनसे इसके बारे में पूछा और उसे यह पता चला कि उन्हें यूहन्ना द्वारा बताया गया मन फिराव का बपतिस्मा मिला हुआ है। उनके बपतिस्मे के बारे में पूछने का पौलुस का कारण स्पष्ट बताया गया है कि प्रेरितों 2:38 के बाद, बिना मन फिराए अर्थात ''पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा'' लिए और ''पवित्र आत्मा का दान'' पाए असली मसीह होने का दावा नहीं किया जा सकता। हमें याद रखना आवश्यक है कि ''विश्वास [अपने] कर्म बिना मरा हुआ है'' (याकूब 2:24-26)। आज्ञापालन के ये कार्य कर्मों से उद्धार को कमाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे विश्वास के वे कार्य हैं जिसका याकूब ने संकेत किया। यानी वह कर्म जो विश्वास का इतना आवश्यक भाग हैं कि हम उन्हें विश्वास के कर्म कह सकते हैं।

ईश्वरीय सहायता का उसका वादा (16:17, 18)[20]

[17]''विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, [18]साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।''

आयत 17. विश्वास करने वालों को दिया गया वादा यह नहीं था कि **ये चिह्न** शेष रहते समय के लिए यीशु में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के द्वारा होने थे। बल्कि यीशु द्वारा दिया गया आश्वासन यह था कि विश्वास करने वालों [के साथ] या **में** ये चिह्न होंगे। इस वायदे को दो भागों में बांटा जा सकता है और प्रेरितों के काम की पुस्तक में ये भाग दिखाई देते हैं। (1) यीशु के वायदे के तुरन्त बाद यानी आरम्भिक कलीसिया में प्रेरितों और आश्चर्यकर्मों के दिए जाने के दौरान पूरा समय वास्तविक चिह्न होने थे और विश्वासियों के साथ होने थे। (2) इन चिह्नों के होने का वर्णन शेष समय के सब विश्वासियों के लिए पवित्र शास्त्र में दर्ज कर दिया जाना था। अन्य शब्दों में, कलीसिया के आरम्भिक दिनों में चिह्न सुसमाचार के प्रचार की

पुष्टि करने के लिए किए जाने थे। मसीही युग के प्रवेश के लिए यह आवश्यक था (देखें इब्रा. 2:4)। मरकुस 16:20 के वादा किए हुए चिह्न मरकुस की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक काफ़ी हद तक पूरे हो चुके थे।[21] लेखक ने उन सभी चिह्नों की बात नहीं की जो प्रेरितों के काम पुस्तक में मिलते हैं, परन्तु यदि यह उसकी योजना से मेल खाते होते तो वह उन्हें लिख सकता था। मरकुस 16:20 एक आयत में उसे संक्षिप्त कर देता है जो प्रेरितों के काम में विस्तार से बताया गया है। परमेश्वर की प्रेरणा पाए जन के ज़हर पीने से कुछ हानि न होने पर प्रेरितों के काम की पुस्तक में इन सभी चिह्नों का उल्लेख है जो यहां दिए गए हैं।

संदर्भ महत्वपूर्ण है। यीशु के साथ निश्चय ही प्रेरित थे। मरकुस 16:14 उन प्रेरितों को उलाहना दिए जाने की बात कहता है जिन्होंने स्त्रियों की गवाही पर विश्वास नहीं किया था। 16:16 में वाक्य का कर्त्ता ''जो'' बपतिस्मे को मान लेने वाले विश्वासी के लिए है। अगली आयत ''विश्वास करने वालों'' साथ होने वाले चिह्नों की ओर ले जाती है। यहां जिन विश्वासियों की बात की गई है यह वे विश्वासी थी जिन्होंने इन चिह्नों का *इस्तेमाल* करना था न कि इन चिह्नों पर *क़ाम* करना था।[22] कुछ विश्वासियों (जिनमें प्रेरित भी थे) ने लोगों को सुसमाचार के संदेश की सच्चाई और सामर्थ पर विश्वास दिलाने के लिए इस्तेमाल और काम दोनों करने थे। इसका अर्थ यह है कि प्रेरितों और जिन पर उन्होंने हाथ रखने थे, चिह्नों पर काम करना था। इन चमत्कारी दानों को पाने वाले विश्वासी ही थे, जिन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक और पत्रियों में दर्ज चमत्कारी चिह्न किए।

आयत 18. यीशु ने बताया किया विश्वास करने वाले **साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे**। क्या आज हर विश्वासी में ऐसे चिह्न और अचम्भे काम होते हैं? हां, परन्तु विश्वासियों के इन चिह्नों के काम करने के अर्थ में नहीं। बहुत से लोग दावा करते हैं कि उन्हें ऐसी सामर्थ पवित्र आत्मा के उन पर उतरने से मिली। परन्तु बाइबल में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि आज किसी भी विश्वासी को चमत्कारी दान मिलें हों। प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के द्वारा, जो कि पिन्तेकुस्त के दिन उन्हें मिला था, आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली (प्रेरितों 2:1-4)। जब उन्होंने दूसरे मसीहियों पर अपने हाथ रखे तो उन मसीहियों को पवित्र आत्मा के विशेष दान मिल गए। उन में से कुछ दान चमत्कार करने के थे। जब चमत्कारों का युग खत्म हो गया और नया नियम लिखा जाना पूरा हो गया, तो प्रकाशन की शक्तियों के साथ-साथ चमत्कारी दान मिलने भी बंद हो गए (देखें 1 कुरि. 13:8)।

कुरनेलियुस और उसके साथियों को अन्यजातियों को अपनी देह में मिलाने के लिए स्वीकार किए जाने की परमेश्वर की इच्छा को दिखाने के लिए सीधे तौर पर विशेष ढंग से सामर्थ मिली। स्पष्ट शिक्षा यह थी कि विश्वव्यापी कलीसिया को भी ये दान मिलें। पतरस ने उसे और कुरनेलियुस को अभी-अभी दिखाई दिए प्रदर्शन का यही अर्थ बताया (प्रेरितों 10:47, 48; 11:15-17)।

बाद में लिखी गई बाइबल की पुस्तकों संदर्भों में चमत्कारी दानों का उद्देश्य कम हुआ लगता है। इब्रानियों 2:3, 4 से पता चलता है कि चिह्नों के द्वारा सुसमाचार की पुष्टि पहले ही पूरा हो जाने की स्थिति में थी। सुसमाचार के संदेश की पुष्टि हो जाने के बाद, परमेश्वर द्वारा प्रकट की

गई सच्चाई की पुष्टि करते रहने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी। सबके लिए अध्ययन करने के लिए लिख दिए जाने के बाद विशेष तौर पर यह सच होना था। पुष्टि किए जाने का उद्देश्य पूरा हो जाने के बाद विशेष दान मिलने बंद हो सकते थे (देखें 1 कुरि. 13:8-10. इफिसियों 4:12 में उसने आत्मिक दानों का उद्देश्य बहाया ''जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का कम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।'' यह ये तब तक जारी रहना था ''जब तक कि हम सब के सब विश्वास में एक न हो जाएं'' (इफि. 4:13)।

कई बार यह तर्क दिया जाता है: ''परन्तु हम सब का विश्वास एक सा नहीं है! विश्वास की एकता अभी नहीं हुई, इसलिए दानों का होना बंद नहीं हो सकता।'' दिया जाने वाला उत्तर यह होना आवश्यक है कि पहली सदी की कलीसिया का ''विश्वास'' एक समान था। इफिसियों 4:3 की ताड़ना में है कि यह लक्ष्य पहले ही प्राप्त कर लिया गया था, जो स्पष्ट रूप में कहता है, ''आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।'' आरम्भिक मसीहियों में ''एकता'' थी क्योंकि वे सभी एक आत्मा की एक ही शिक्षा को मानते थे। इसलिए इफिसियों 4:13 में ''विश्वास की एकता'' का अर्थ वह एकता ही है जो पूरे प्रकाशन यानी पूरे नये नियम से मिलती है। इसके अलावा इफिसियों 4:5 में ''एक ही विश्वास'' की करता है जो कि वह एक ''शिक्षा'' है जिसके लिए हम सब को ''यत्न'' करना आवश्यक है (यहूदा 3)।

सुसमाचार के चौथे विवरण का मुख्य विषय और यूहन्ना 20:30, 31 में बताई गई आवश्यक अवधारणा एकता ही है। यूहन्ना ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ''चिह्न दिखाए'' गए ताकि हर कोई ''विश्वास'' कर सके कि ''यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन'' पाए। यदि यूहन्ना द्वारा लिखित चिह्नों को सुसमाचार के उसके विवरण में से पढ़ने से विश्वास आ सकता था, तो आज हमें हमारे लिए सुसमाचार संदेश की पुष्टि के लिए लिखे गए चिह्नों को देखना आवश्यक है। परमेश्वर हमारे लिए अनावश्यक काम नहीं करता; हमारे पास पढ़ने, समझने, विश्वास करने और आज्ञा मानने के लिए जो कुछ भी चाहिए, वह सब है। मरकुस 16:19, 20 इस सच्चाई को दोहराता है।

इफिसियों 4:8-13 के साथ 1 कुरिन्थियों 13:8-13 को मिलाने से इस बात पर ज़ोर पड़ता है कि ये चमत्कारी ''दान'' या (चिह्न) दिखाने की योग्यताएं, समय के छोटे से काल के अंदर बंद हो जानी थीं।[23] हमारे प्रचार करने और सुसमाचार को बताने के लिए पवित्र शास्त्र में दर्ज चिह्नों का इस्तेमाल करते हुए आज विश्वासियों के साथ ये चिह्न होते हैं।

उसका स्वर्गारोहण और वचन को पक्का करना (16:19, 20)[24]

[19]प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। [20]और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।[25]

आयत 19. मरकुस के विवरण के आगे बढ़ने पर चालीस दिन के उस समय का अंत हो जाता है जब यीशु ने अपने चेलों को अपनी मृत्यु के बाद दिखाया कि वह जीवित है। **प्रभु**

यीशु उनसे बातें करने के बाद उसके वाक्यांश अपने स्वर्गारोहण से थोड़ा पहले, जैतून पहाड़ पर अपने चेलों के साथ उसकी अंतिम मुलाकात के अवसर को कहा गया होगा (देखें प्रेरितों 1:9-12)। अपने स्वर्गारोहण पर, यीशु **स्वर्ग पर उठा लिया गया**; और परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करके पवित्र लोगों के लिए विनती करने के लिए, अपना काम आरम्भ करने के लिए **परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया** (देखें इब्रा. 7:24, 25)।

मरकुस 16:17, 18 वाले चिह्न, प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए वर्णन के अनुसार ग्रेट कमीशन पूरा किया जाने पर बाद में आए। प्रेरितों 1:9 में ''यह कहकर'' वाक्य खण्ड उस सब के लिए है जो यीशु ने पुनरुत्थान के बाद के अपने दर्शनों के दौरान अपने चेलों को बताया था।

आयत 20. यीशु के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के बाद प्रेरितों ने **निकलकर हर जगह प्रचार किया, और** पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा जो प्रेरितों 2 में उसने उन पर भेजी थी, **प्रभु उनके साथ काम करता रहा**। उस पिन्तेकुस्त वाले दिन कलीसिया अस्तित्व में आ गई और सारे संसार में फैलने लगी जैसा कि प्रेरितों के काम के बाकी के अध्यायों में बताया गया है। चेलों ने हर जगह प्रचार करते हुए **उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़** किया।

बाद में किए जाने वाले प्रचार की मुख्य बात यह थी कि यीशु ने अपने स्वर्गारोहण पर परमेश्वर के दाहिने हाथ अपना शासन आरम्भ कर दिया था (मरकुस 16:19; प्रेरितों 2:34-36)। वह तब तक राज करता रहेगा जब तक राज्य को पिता को नहीं सौंप देता (1 कुरि. 15:23, 24), और जैसे वह बादलों में से गया था, वैसे ही फिर से दोबारा सबके देखते हुए आएगा (प्रेरितों 1:9-11)। उसका आना न तो चुपके से या गुप्त में और न ही कई पड़ावों में होगा। यदि 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 के हवाले प्रतीकात्मक हैं तो उसका आना संसार की सबसे ऊंची आवाज के साथ होगा।

मरकुस 16:20 सुसमाचार प्रचार के इतिहास के संक्षिप्त बात है, जिसका वर्णन प्रेरितों की काम की पुस्तक में दिया गया है। कलीसिया के आरम्भ के समय किया जाने वाले प्रचार की पुष्टि चमत्कारी चिह्नों और पवित्र आत्मा के अचम्भे कामों के द्वारा की गई। इन आश्चर्यकर्मों से प्रभु की करुणा और पवित्र आत्मा की पुष्टि की पूर्ति हुई।

यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां पूरी हो गई थीं। मूसा के युग के पूरा होने के साथ, मनुष्यजाति का इतिहास मसीहियत के सारे संसार में फैल जाने के अपने अंतिम चरण में पहुंच गया।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए: मरकुस का लम्बा अंत (16:9-20)

बहुत से टीकाकार 16:9-20 को मरकुस के अनुसार सुसमाचार के मूल लेख का भाग नहीं मानते। कुछ जो इस भाग को प्रमाणिक, या ''कैनन का भाग'' मानते हैं, वे यह नहीं मानते कि यह पवित्र शास्त्र के इस विशेष भाग में है। परन्तु वे यह नहीं जानते कि यह भाग नये नियम में और कहां होना चाहिए।

इस भाग के मूल के सम्बन्ध में कई व्याख्याएं दी गई हैं। उदाहरण के लिए इन आयतों को मरकुस के हस्तलेख में बाद में जोड़ा गया माना जाता है। इसका अर्थ या तो यह होगा कि 16:8 के सुसमाचार के इस विवरण के अंत में लिखने के लिए था या मूल में इसका अंतिम भाग खो

गया।[26] कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लम्बा अंत नहीं मिलता है,[27] इस कारण तीसरी सदी के अंत और चौथी सदी के आरम्भ के कुछ लेखकों ने इसे अप्रमाणिक माना।

तातियान (120–180 ई.) ने अपनी पुस्तक *डायाटेसारोन* में मरकुस 16:15–20 को शामिल किया जिसमें सुसमाचार के चारों विवरण एक ही जगह हैं।[28]

इरेनियुस (130–202 ई.) इस वचन के प्रामाणिक होने के पक्ष में था। विश्वास के इस बड़े रक्षक ने इसकी प्रमाणिकता के स्पष्ट भरोसे के साथ इसकी बात करते हुए, मरकुस के अंतिम भाग का उपयोग किया।[29]

मसीही इतिहासकार यूसबियुस (लगभग 263–339 ई.) ने कहा कि ''मरकुस के अनुसार सुसमाचार की बहुत सी प्रतियां'' जिनसे वह परिचित था, आयत 8 के साथ खत्म होती थीं। परन्तु उसने संकेत दिया कि मरकुस की अन्य प्रतियों का अंत लम्बा था। यूसबियुस ने यह तय किया कि ''इस पाठ के साथ किया जाने वाला सही काम इसके अर्थ की व्याख्या करना है''; इस प्रक्रिया में उसने इस लम्बे अंत को मत्ती के अंत के साथ मिलाया। उसने कहा कि लम्बा अंत उसे मत्ती के साथ उलझता हुआ नहीं मिला।[30]

चौथी सदी तक, जेरोम (349–420 ईसवी) कई हस्तलेखों में मरकुस 16:9–20 के होने को जानता था,[31] परन्तु उसने इन आयतों को सुसमाचार के मूल विवरण का भाग नहीं माना होगा। फिर भी पवित्र शास्त्र के अपने लातीनी अनुवाद, वलगेट में उसने इन आयतों को शामिल किया। मरकुस का लम्बा अंत यूनानी हस्तलेखों के 99 प्रतिशत भाग में भी शामिल है।[32]

जे. डब्ल्यू. मैक्गर्व[33] ने कई तर्कों के साथ 16:9–20 के मरकुस के लिखे होने को कहा। एक तर्क पवित्र शास्त्र के इस भाग में ''नये शब्दों'' के सम्बन्ध में है जो कि मरकुस के बाकी के भाग के किसी और लेखक का संकेत देने के लिए कहे गए हैं। उन्नीसवीं सदी में एक विद्वान ने इस भाग को ''इक्कीस शब्दों और अभिव्यक्तियों से जिनका इस्तेमाल मरकुस ने कहीं और नहीं किया, कम नहीं'' बताया।[34] मैक्गर्वे ने लिखा है कि उसने स्वयं ''लूका के विवरण की अंतिम बारह आयतों'' को जांचा और ''नौ शब्द ऐसे पाए जो उसके विवरण में कहीं और इस्तेमाल नहीं हुए,और उनमें से चार वे हैं जो नये नियम में और कहीं नहीं मिलते।''[35] मैक्गर्वे के अनुसार यह तर्क देना गलत है कि मरकुस के अंत में नये शब्दों का इस्तेमाल से यह साबित होगा है कि अंतिम भाग को उसी हाथ से नहीं लिखा गया जिस हाथ से बाकी की पुस्तक।

वृहदअक्षर लिपि के बाद की सभी और प्रवाही लिपियां, वल्गेट के साथ कई पुराने लातीनी अधिकारी एक पुराने सीरियाई हस्तलेख सीरियाई पिशित्ता संस्करण, तथा अन्य कई संस्करण। दो हस्तलेख जिनमें 16:9–20 नहीं है, और इस कारण इस वचन के मरकुस द्वारा लिखे जाने के विरोध में होने का सम्भव प्रमाण देता है, दोनों चौथी सदी के हैं। वे कोडेक्स वेटिकेनुस और कोडेक्स सिनेटिकुस हैं। इन्हें हमारे बेहतरीन आरम्भिक हस्तलेख माना जाता है। इस वचन में पाए जाने वाले बहुत से अलग–अलग संस्करणों के कारण उन्हें उन हस्तलेखों से लिया गया होगा जिन्हें वेटीकन और सिनेटिक्स कोडिसस से पहले नकल किया गया था।

मरकुस 16:9–20 के पक्ष में बहुत से गवाह हैं: (द अलग्ज़ेंड्रियन मेन्युस्क्रिप्ट द इफ्राएस कोडेक्स बेज़े, और अधिकारी) the Alexandrian Manuscript, the

> Ephraem Manuscript, Codex Bezae, other early uncials, all late uncials and cursives, a number of old Latin authorities plus the Vulgate, one Old Syriac manuscript, the Syriac Peshitta version, and many other versions.[36]

इनमें से बहुत सी प्रतियां पितामह हस्तलेख से बनाई बनाई गईं जो कि वैटिकन और सिनेटिक हस्तलेखों से भी पहले का था। यह 16:9-16 की प्रमाणिकता का काफ़ी अच्छा प्रमाण है, परन्तु यह इस बात का सुझाव देता हे कि कोडेक्स (पुस्तक रूप में हस्तलेख) का कोई अंतिम पृष्ठ शास्त्रियों द्वारा प्रतियां बनाने से पहले, खो गया हो सकता है।

अंत में 16:9-20 के सभी तथ्य इसी सामग्री के अन्य वचनों से सच साबित होते हैं। मरकुस के लिए उन बहुत से चिह्नों को जो बाद के वर्षों में प्रेरितों तथा दूसरे मसीहियों ने किए (16:17, 18) लिखना अनावश्यक था। एकमात्र आश्चर्यकर्म जिसका हमारे पास कोई उदाहरण नहीं था वह बिना किसी हानि के विष पीने का है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पहले सदी में यह हुआ चाहे प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसका उल्लेख नहीं है।

यहां पर कैनन में इस अंश को स्वीकार करने का एक और कारण शायद सहजबुद्धि है। किसी भी पुस्तक को, विशेषकर हमारे प्रभु के जी उठने की कहानी को बताने वाले सुसमाचार को इस कथन के साथ खत्म करना कितना अनुपयुक्त होगा कि ''और उन्होंने किसी से कुछ न कहा क्योंकि डरती थीं'' (16:8)!

NASB में 16:20 के बाद एक अंतिम वाक्य मिलता है:

> [और उन्होंने ये सब निर्देश पतरस और उसके साथियों को बताए। और उसके बाद, यीशु ने उनके द्वारा पूर्व से पश्चिम तक अनन्त उद्धार का पवित्र और अविनाशी घोषणा स्वयं भेजी।]

यह भाग कोष्ठकों के साथ-साथ तिरछे अक्षरों में है क्योंकि यह साबित करने के लिए कि इसे मरकुस ने लिखा कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है।

प्रासंगिकता

अच्छा दिल (16:1-8)

यीशु का पुनरुत्थान मसीहियत की बुनियाद का अभिन्न अंग है। इसी कारण पवित्र आत्मा ने हमें सुसमाचार के हर विवरण में पुनरुत्थान की कहानी पूरे विस्तार से बताई है। वह हमें यीशु के पुनरुत्थान का पूरा विवरण और इसके बाद के गवाही के चालीस दिनों के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य बताना चाहता था। वह हमें इसे सभी सुस्पष्ट विवरणों को, इसके सारे रूपक और प्रभाव में और इसकी सारी महिमा और वास्तविकता में दिखाना चाहता था।

यीशु ने अपने दु:ख सहने और मृत्यु के बाद, अपने जीवित होने को ''बहुत से पक्के प्रमाणों'' से दिखाया (प्रेरितों 1:3)। KJV में ''बहुत से अचूक सबूतों'' से है। मुर्दों में से अपने जी उठने के सम्बन्ध में हमें दिए गए यीशु के प्रमाण को नकारा, महत्वहीन माना या पूरी तरह

से नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। प्रमाण इतने स्पष्ट और विश्वास दिलाने वाले हैं कि कोई भी उन्हें खारिज नहीं कर सकता।

अपने जी उठने के बाद यीशु रविवार सुबह-सुबह कब्र पर सबसे पहले बिलख़ती हुई मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया (मरकुस 16:9)। इस स्त्री में हम मसीह के सच्चे अनुयायी की तस्वीर को देखते हैं। हम विशेषकर ऐसा दिल देखते हैं जो यीशु के चेले का होना चाहिए।

1. मरियम एक ऐसी स्त्री थी जिसका *दिल अहसानमंद* था। क्रूसारोहण और पुनरुत्थान के विवरणों के अलावा उसका उल्लेख केवल लूका 8:1-3 में मिलता है:

> इस के बाद वह नगर-नगर और गांव-गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने लगा, और वे बारह उसके साथ थे, और कुछ स्त्रियां भी थीं जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और वे ये हैं: मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिस में से सात दुष्टात्माएं निकली थीं, और हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना, और सूसन्नाह, और बहुत सी अन्य स्त्रियां। ये अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं।

यीशु ने उसमें से सात दुष्टात्माओं को निकाला था; और समर्पण और आभार जताते हुए वह उसकी निडर चेली बन गई थी। दूसरी स्त्रियों के साथ जिनमें पहले दुष्टात्माएं थीं या जिन्हें बीमारी से चंगा किया गया था, वह यीशु और उसके चेलों के साथ नगर नगर जाती, अपनी जेब से खर्च करके उनकी सहायता करती। उसके काम दिल की गहराई से उसके अहसानमंद होने की घोषणा करते थे।

मरियम उन नौ कोढ़ियों के जैसी नहीं थी जिन्हें यीशु से चंगाई तो मिल गई परन्तु वे धन्यवाद का एक शब्द कहे बिना चले गए थे (लूका 17:11-19)। जहां तक हमें पता है, यीशु की कृतज्ञ सेविका के रूप में उसने अपना सारा जीवन दे दिया था।

2. इस स्त्री का *सच्चा मन* था। इस गुण को हम यीशु की सेवकाई में उसके द्वारा की जाने वाली सहायता से देख सकते हैं। वह यीशु और उसके प्रेरितों की सेवकाई में सहायता के लिए जो कुछ भी वह दे सकती थी उसे देते हुए वह उसके पीछे चलती थी। मत्ती 27:55 कहता है कि वह यरूशलेम में उसके प्रचार करने में उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए योगदान देने के लिए गलील से उसके पीछे आई। यीशु के पकड़वाए जाने, पेशियों और क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय वह क्रूस तक उसके पीछे गई, जबकि उसे चेले भाग गए थे (मरकुस 15:47)। स्पष्टतया वह और दूसरी भक्त स्त्रियां यीशु के मरने तक क्रूस के पास रहीं। वह और ये दूसरी स्त्रियां यूसुफ़ और निकुदेमुस के यीशु के शव को क्रूस पर से उतारते हुए देख रही थीं। उन्होंने यह देखने के लिए कि वे यीशु को कहां दफ़नाते हैं उनके पीछे-पीछे जाकर, अपनी नज़र बनाए रखी।

तीसरे दिन यानी पुनरुत्थान वाले दिन वह और दूसरी स्त्रियों की टोली यीशु के शव पर लगाने के लिए अपने साथ सुगन्धित वस्तुएं लेकर कब्र पर सबसे पहले पहुंचीं। मरकुस 16:1 बताता है कि वे क्या कर रही थीं: ''जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं कि आकर उस पर मलें।''

यह सच्चे मन की प्रतिक्रियाएं हैं। मरियम उसे दुष्टात्माओं से शुद्ध करने के लिए यीशु की

आभारी थी; परन्तु उसका मन आभारी होने से भी बढ़कर ईमानदार और सेवा करने वाला बन गया। यह स्त्री इस बात को दिखाती है कि सचमुच में अभारी हो जाने वाला व्यक्ति यीशु का सच्चा सेवक बन जाता है। मरियम की वफ़ादारी तब भी कम नहीं हुई जब उसे विरोध का सामना करना पड़ा और खतरा उठाना पड़ा। वह किसी भी कीमत, समय या परिस्थिति के बावजूद यीशु के साथ खड़ा रहने के लिए दृढ़ संकल्प है।

3. उसका *मन पक्का* था। उसकी वफ़ादारी थोड़ी देर तक के लिए नहीं थी। यह लम्बे समय तक रहने वाली और पक्की थी। उसने सफ़र की लम्बी दूरी के लिए जो जो चाहिए था उस पर विचार कर लिया था।

स्त्रियों की टोली जिनके नाम मरकुस 16:1 में बताए गए हैं, पुनरुत्थान की सुबह, दिन चढ़ने से पहले कब्र पर पहुंच गई। यूहन्ना 20:1 कहता है कि ''मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई।'' शायद वह दूसरी स्त्रियों से अलग होकर उनसे पहले कब्र पर पहुंच गई। जब वह यीशु के दफ़नाए जाने वाली जगह पर पहुंची तो उसने ऊपर देखा और पाया कि कब्र के मुंह से बड़ा पत्थर लुढ़का हुआ है। उसने तुरन्त यह निष्कर्ष निकाल लिया होगा कि किसी ने यीशु का शव चुरा लिया है। उसने यह जानने के लिए कि क्या हुआ, प्रतीक्षा नहीं की, बल्कि मुड़कर पतरस और यूहन्ना को ढूंढ़कर वह सब जो उसे लगा कि उसने देखा है, बताने के लिए यरूशलेम की ओर भागी (यूहन्ना 20:1, 2)। शायद कइयों ने जो पतरस और यूहन्ना के साथ थे, उसकी बात पर विश्वास नहीं किया, परन्तु यह पता लगाने के लिए कि मरियम की कही बात सच है या नहीं, पतरस और यूहन्ना तुरन्त कब्र की ओर भाग गए (20:3)।

यूहन्ना 20:11 हमें बताता है, ''मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही।'' पतरस और यूहन्ना के कब्र को देखने गए होने पर मरियम घर पर नहीं रही। वह जितनी जल्दी हो पाया कब्र पर लौट गई। थकी हुई और दु:खी होने के कारण वह धीरे-धीरे चली। उसके कब्र पर पहुंचने तक, पतरस और यूहन्ना पहले पहुंचकर, अपनी जांच पड़ताल करके, वहां से चले गए। मरियम यह समझ में न आने पर कि क्या करे उस सब पर जो हुआ था, विचार करते हुए कब्र पर ही रही। वह थकी अवश्य थी, परन्तु हार नहीं मानना चाहती थी। वह परेशान थी और कुछ प्रश्नों के उत्तर पाए बिना कब्र से नहीं गई।

4. मरियम का *हृदय विनम्र* था। इस उलझन में कि अब क्या करे, मरियम दु:खी होकर कब्र पर रोती रही। वह घबराई हुई और परेशान थी।

यीशु के दफ़नाए जाने वाली जगह पर पहली बार जाने पर वह इसकी जांच पड़ताल करने के लिए रुकी नहीं थी; परन्तु इस बार मरियम ने झुककर कब्र के अंदर देखा। उसने दो स्वर्गदूतों को देखा, जिनमें से एक उस जगह पर जहां यहां यीशु का शव रखा गया था सिरहाने और दूसरा उस जगह के पैताने बैठा था, जहां यीशु को रख गया था (यूहन्ना 20:11, 12)। किसी कारण मरियम को पता नहीं चला कि ये दो जन, जिन्हें वे देख रही थी, स्वर्गदूत हैं। हमें नहीं पता कि क्यों। हो सकता है कि आंखें भरी होने के कारण वह साफ़-साफ़ नहीं देख पाई या हो सकता है कि उसने उनकी ओर सीधे नहीं देखा। तिरछी नज़र से उन्हें देखते हुए उसने अनुमान लगा लिया होगा कि वे माली के सहायक हैं।

स्वर्गदूतों ने पूछा, ''हे नारी, तू क्यों रोती है?'' और मरियम ने कहा, ''वे मेरे प्रभु को उठा

ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है'' (यूहन्ना 20:13)। इसके बाद यीशु उसके सामने खड़ा हो गया और वह उसे पहचान नहीं पाई। रोते हुए उसकी आंखें अधखुली रही होंगी। शायद उसने उसकी ओर देखा ही नहीं। यीशु ने उससे वही प्रश्न पूछा जो स्वर्गदूतों ने पूछा था: ''हे नारी, तू क्यों रोती है?'' उसे माली समझकर उससे कहा, ''हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझे बता कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी'' (यूहन्ना 20:15)। उसके कहने का अर्थ होगा, ''यदि तू मुझे बता दे कि तूने उसकी देह को कहां रखा है, तो मैं किसी की सहायता से देह को उचित ढंग से दफ़ना पाऊं।''

उनकी बातचीत के अगले भाग में नये नियम के सबसे छोटे कथनों के साथ लिखा गया है। बातचीत में केवल दो शब्द हैं जिनमें से एक यीशु ने बोला और एक मरियम ने। यीशु ने उसे नाम लेकर बुलाया। उसने कहा, ''मरियम!'' इतना ही काफ़ी था। अब उसे पता चल गया था कि वह कौन है। जैसे यीशु ने उसका नाम लेकर उसे बुलाया वैसे और कोई नहीं बुला सकता था।[37] उसने पीछे मुड़कर सीधे उसकी ओर देखा और यह कहता कि ''रब्बूनी'' जिसका अर्थ है ''हे गुरु!''

यहां पर मरियम आनन्द के मारे उसके पांव गिर गई होगी और उसे पकड़ने के लिए आगे बड़ी होगी; परन्तु यीशु ने कहा, ''मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ'' (यूहन्ना 20:17)।[38]

जी उठने के बाद के इन दिनों में बहुत कुछ किया जाना बाकी था। दूसरे भाइयों को यह बताया जाना आवश्यक था कि यीशु सचमुच में से मुर्दों में से जी उठा है। परन्तु उसके पीछे चलने के अपने हठ के कारण मरियम ने उसे पहले देखा (मरकुस 16:9)।

मरियम कब्र से चली गई और जो कुछ उसने देखा और सुना था, जाकर दूसरे चेलों को बताया (मरकुस 16:10)। बाइबल में मरियम मगदलीनी के अंतिम उल्लेख में उसे वही करते हुए दिखाया गया है जो यीशु ने उससे करने के लिए कहा था। यूहन्ना ने हमें उसके समर्पण के बारे में बताया है: ''मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, 'मैं ने प्रभु को देखा, और उसने मुझ से ये बातें कहीं''' (यूहन्ना 20:18)। कइयों ने जो कुछ वह उन्हें बता रही थी उस पर विश्वास नहीं किया होगा। हम पढ़ते हैं, ''उसने जाकर यीशु के साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, प्रतीति न की'' (मरकुस 16:10, 11)। उन्होंने उसका विश्वास किया या नहीं, परन्तु वह विश्वास करके, बताकर और याद रखकर सही कर रही थी। इस प्रकार उसने दिखाया कि विश्वासी हृदय को क्या करना चाहिए।

निष्कर्ष: जी उठे मसीह के साथ मरियम की शानदार मुलाकात मरकुस के विवरण में संक्षिप्त में दी गई है: ''सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया'' (मरकुस 16:9)। हमारे लिए यह अनोखी बात है कि यीशु ने अपने जी उठने के बाद पहली बार इस मामूली सी लगने वाली स्त्री को दिखाई दिया। हम पूछ सकते हैं, ''यीशु ने पहले अपनी मां को दिखाई क्यों नहीं दिया?'' वह पिलातुस और प्रधान याजकों के पास यह कहने के लिए क्यों नहीं गया, ''मैं तुम्हें बताया था कि मैं कौन हूं। तुमने मेरा विश्वास क्यों नहीं किया?''

ऐसे प्रश्नों का उत्तर किसे पता था? हमें परमेश्वर के दिमाग को जानने का सौभाग्य नहीं मिला है, सिवाय उसके जो उसने हमें बाइबल में बताया है। परन्तु हम जानते हैं कि उसकी बड़ी योजना में मरियम के दिल ने बड़ी भूमिका निभाई।

2 इतिहास 16:9 में हम पढ़ते हैं, ''देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए। ...'' पक्की बात है कि मरियम ने इस अद्‌भुत सहायता के पूरा होने को देखा। उसका हृदय सही था, यानी ऐसा हृदय जिसकी तलाश में परमेश्वर रहता है; और उसने इसे अपनी सामर्थ को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने सुसमाचार के विवरणों में उसकी कहानी को शामिल किया और उसके चेलों के उसकी वापसी की राह देखते वर्षों तक हम उसके सच्चे मन को याद रखेंगे। परमेश्वर मरियम मगदलीनी के माध्यम से संसार को पुनरुत्थान का समाचार देने लगा। अपने अद्‌भुत समाचार के धारक और अपनी सामर्थ के गवाह होने के लिए उसने बहुत से दूसरे लोगों को छोड़कर मरियम के आभारी, विश्वासी, आज्ञाकारी मन को चुना।

यीशु के पुनरुत्थान की इस सुबह जो कुछ मरियम के साथ हुआ वह हमारे लिए एक बड़ा उदाहरण है। इससे हमें यह सच्चाई का पता चलता है जो हमारे परमेश्वर में निष्कपट विश्वास रखने पर ही वह हमारे अंदर अपनी सामर्थ को रखेगा। वह ऐसे लोगों की खोज में रहता है ताकि वह उनके द्वारा संसार को अपनी सामर्थ दिखा सके। उसने मरियम मगदलीनी के साथ ऐसा किया और यदि हम वैसा ही दिल दिखाते हैं जैसा मरियम ने दिखाया, तो वह हमारे साथ भी वैसा ही करेगा।

उसकी गवाह बनने वाली स्त्रियां (16:1-8)

पुनरुत्थान के इस विवरण वाली स्त्रियां हम सबके लिए अमूल्य और अविनाशी उदाहरण देती हैं। वे क्रूसारोहण की सबसे प्रबल देखने वाली थीं और यीशु के पुनरुत्थान की सुबह कब्र पर सबसे पहले वही गईं।

यीशु की मृत्यु के अंतिम दृश्यों को याद करते हुए मरकुस ने लिखा, ''कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं: उन में मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी थीं'' (15:40)। मरकुस ने एक और टिप्पणी जोड़ी जो यीशु की सेवकाई के दौरान उसके साथ उनकी पिछली प्रतिबद्धता को याद दिलाती है: ''जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवाटहल किया करती थीं; और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं'' (15:41)।

जहां यूसुफ़ और निकुदेमुस यीशु की देह को क्रूस से कब्र तक ले जा रहे थे, वहीं ''मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है'' (15:47)। उन्होंने उसके दफ़नाए जाने की जगह की पहचान रखी ताकि बाद में आकर यीशु के शव को दफ़नाए जाने के लिए अच्छी तरह तैयार कर सकें।

इन स्त्रियों के कामों से कि इसने प्रभावित नहीं होना था और उनके विश्वास से भरे इरादों से किसे चुनौती नहीं मिलनी थी? उन्होंने इस कठिन और दम तोड़ देने वाले माहौल में ऐसे गुणों को दिखाया जो यीशु के हर चेले में होने चाहिए।

संकट में चरित्र बनता नहीं है बल्कि इसमें चरित्र का पता चलता है। जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था तो उसके बारह में से दस प्रेरित छिपने की जगहों में भाग गए थे; परन्तु यह स्त्रियां बहादुरी से उस पीड़ा के लिए जो यीशु हमारे छुटकारे के लिए सह रहा था, शोक करने के लिए, क्रूस के कदमों के पास रहीं। वे यीशु की कष्ट भरी मृत्यु के छह के छह घण्टे क्रूस के पास रही होंगी।

आइए अपने मनों के अंदर उन गुणों को ढूंढें जो उन साहसी स्त्रियों ने दिखाए।

1. स्त्रियां *सम्मानपूर्ण लगाव* से रुकी रहीं। मन में पहले से अपनी योजनाओं को लेकर, विचार करके, शुक्रवार शाम के लिए तैयार, होकर उन्होंने शनिवार को सब्त के नियमों का पालन करते हुए प्रतीक्षा की और फिर रविवार सुबह, शायद सुबह-सुबह कब्र की ओर निकल पड़ीं (16:1, 2)। कब्र पर पहुंचकर वे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाने लगीं ''हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?'' (16:3)। यह एक समझदारी वाला प्रश्न था। वास्तव में यह एक व्यावहारिक और आवश्यक प्रश्न था और ऐसा प्रश्न था जिसे कब्र की ओर जाने के लिए यरूशलेम से निकलने पर आम तौर पर पूछा जाता होगा। यीशु की मृत्यु के दबाव में यह स्त्रियां सम्भवतया विश्लेषण करने के बजाय सहानुभूति भरे दिल से सोच रही होंगी। यदि वे साफ़ साफ़ सोच रही होती तो उन्होंने कब्र पर जाने के पहले सुझाव पर यह पूछना था, ''हमारे लिए पत्थर कौन लुढ़काएगा?'' यदि वे भीतर नहीं जा सकती थीं तो उनका कब्र पर जाना व्यर्थ होना था। यीशु के लिए प्रेम और लगाव से भरी स्त्रियों ने, जो किया जाना आवश्यक था, उसका निर्णय लिया और इसे करने का बीड़ा उठा लिया था।

लगता है कि केवल इन स्त्रियों ने ही दफ़नाए जाने के लिए, यीशु की देह को तैयार करने के महत्व को दिल पर लिया। यूसुफ़ और निकुदेमुस ने, जो कुछ वे कर सकते थे, जल्दी-जल्दी किया, परन्तु ये स्त्रियां उसके शव को लापरवाही से दफ़नाने के लिए नहीं छोड़ना चाहती थीं। सम्मान के कारण उन्हें कब्र पर जाना पड़ा ताकि वे यीशु की देह को ध्यान से और रस्मी ढंग से विश्राम के लिए रख सकें।

2. इन स्त्रियों ने *पवित्र जिज्ञासा* से भी काम किया। जब वे कब्र के भीतर गईं तो उन्होंने नज़र उठाकर देखा और पाया कि अंदर जाने की समस्या पहले ही सुलझ चुकी थीं (मरकुस 16:4)। पत्थर को किसी मानवीय या ईश्वरीय हाथ ने लुढ़का दिया था। मरियम मगदलीनी ने एकदम यह निष्कर्ष निकाल लिया होगा कि कोई यीशु के शव को चुरा ले गया है। मरियम के लिए भीतर जाने के पहले वाले प्रश्न से भी बड़ी समस्या खाली कब्र थी। यह बताने के लिए कि क्या हुआ है वह उसी समय पतरस और यूहन्ना बताने के लिए ढूंढ़ने के लिए निकल गई (यूहन्ना 20:2)।

मरियम मगदलीनी के अलावा इस टोली की और स्त्रियां भी कब्र पर रुककर यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि क्या हुआ है। कब्र के अंदर उन्होंने ''एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए'' देखा।[39] स्त्रियां भयभीत होकर भूमि पर गिर पड़ीं। लूका ने उस गम्भीर दृश्य को दिखाया है जो सदा तक याद रखा जाना था: ''जब वे डर गईं, और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं, तो उन्होंने उनसे कहा, 'तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो?''' (लूका 24:5)। फिर स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों बड़े को प्रेम से समझाया ''मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया

गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है। आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था'' (मत्ती 28:5, 6)।

दफ़नाए जाने की कोठरी के अंदर देखते हुए स्त्रियों ने पत्थर की उस सिल्ली को देखा जहां यीशु का शव रखा गया था। अंदर जाकर उन्होंने पुनरुत्थान के वहां पर पड़े मलमल के वस्त्र को *देखा*। स्वर्गदूत ने भी उन स्त्रियों को प्रभु का मुर्दों में से जी उठने के वादा याद दिलाया, ''स्मरण करो कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा था, 'अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे''' (लूका 24:6, 7)। फिर स्वर्गदूत ने इन स्त्रियों को यह *हल* दिया:

> ''चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा। जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे'' (मरकुस 16:6, 7)।

कब्र से निकलने पर इन स्त्रियों के मनों में शुभ समाचार का सुखद गीत होगा; परन्तु उनके अंदर खौफ़ का बादल भी था, क्योंकि उनके मनों पर यह पता होने का बोझ था कि परमेश्वर का पुत्र यीशु पृथ्वी पर उनके बीच में था (मत्ती 28:8)। वह आनन्द से भी भरी हुई थीं और भय से, शुभ समाचार से भी और अनोखे आभासों से भी।

खाली कब्र के अजूबे को देख लेने के बाद ये स्त्रियां बिना यह जांच पड़ताल किए वहां से नहीं गई कि क्या हुआ है। इसी प्रकार से, बिरिया के लोग जिन्होंने पौलुस को यीशु के पुनरुत्थान का प्रचार करते हुए सुना था, ध्यान से इसका पता लगाने के लिए विवश थे। ''ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें योंहीं हैं कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। इनकी सोच इन स्त्रियों वाली भी और खाली कब्र के बारे में हमारी सोच भी परमेश्वर की प्रेरणा दी गई गवाही की खोज ईमानदारी से करने वाली होनी आवश्यक है।

3. इन स्त्रियों की *पवित्र प्रतिबद्धता* थी। अपने पुनरुत्थान के बाद शायद यीशु दूसरी बार उन दूसरी स्त्रियों को दिखाई दिया जिन्होंने खाली कब्र को देखा था। वे मरियम मगदलीनी के साथ कब्र पर आई थीं। उन्होंने कब्र के अंदर स्वर्गदूत को देखा था और स्वर्गदूत ने उनसे कहा था कि ''शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो'' कि यीशु मुर्दों में से उठा है (मत्ती 28:7)।

एक बड़े महत्वपूर्ण आदेश को मानने की आज्ञा पाकर ये स्त्रियां पहले तो डरकर सहम गईं। ''वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कँपकँपी और घबराहट उन पर छा गई थी; और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं'' (मरकुस 16:8)। फिर होश आने पर साहस जुटाकर ''कब्र से लौटकर उन्होंने उन ग्यारहों को, और अन्य सब को, ये सब बातें कह सुनाईं'' (लूका 24:9)। अपने डर को उन्होंने आज्ञा मानने में बाधा नहीं बनने दिया।

यरूशलेम जाते हुए वे तेज़-तेज़ चल रही थीं। जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था उसे बताने के लिए वापस जाते हुए हम कल्पना कर सकते हैं कि वे क्या-क्या बातें कर रही होंगी! खाली कब्र को देखने और स्वर्गदूत द्वारा यह बताए जाने के बाद कि यीशु मरने के बाद फिर से

जी उठा है, शोक के उनके काले दिन को उनके सबसे चमकदार और सबसे महिमा से भरे दिन में बदलने के लिए काफ़ी था।

यरूशलेम की ओर तेज़-तेज़ चलते हुए इन स्त्रियों ने रास्ते के बीच अपने सामने यीशु को खड़े देखा। उसने उन्हें ''सलाम'' कहते हुए बुलाया। स्त्रियों ने वही किया जो एक दिन हम सब करेंगे यानी उन्होंने उसके कदमों पर गिरकर उसे दण्डवत किया (मत्ती 28:9; देखें फिलि. 2:10)। मुर्दों में से जी उठा, यीशु देहधारी हुआ परमेश्वर उनके सामने खड़ा होकर उन्हें सलाम कह रहा था! हम कल्पना कर सकते हैं कि यह नज़ारा कैसा होगा?

यीशु ने स्त्रियों से कहा, ''मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो कि गलील को चले जाएं, वहां मुझे देखेंगे'' (मत्ती 28:10)। ''मत डरो'' के दिलेरी देने वाले शब्दों के साथ उसने उनके मनों को शांत किया, क्योंकि वे जी उठे मसीह की उपस्थिति में होने के विचार से कांप गई थीं। अपने क्रूसारोहण से पहले यीशु ने अपने चेलों से वादा किया था कि अपने जी उठने के बाद वह उनसे गलील में मिलेगा। उसने कहा था, ''परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा'' (मत्ती 26:32)। कब्र में स्वर्गदूत ने भी उनसे यीशु के इस वायदे की बात की (मरकुस 16:7)।

जब इन स्त्रियों ने पहली बार चेलों को जाकर बताया तो उन्होंने उनकी बात को गम्भीरता से नहीं लिया। लूका ने लिखा है, ''परन्तु उनकी बातें उन्हें कहानी सी जान पड़ीं, और उन्होंने उनकी प्रतीति न की'' (लूका 24:11)। फिर भी इन स्त्रियों ने अपनी गवाही को दृढ़ता से थामे रखा जब तक यह ऐसी ही और गवाहियों के साथ मिल नहीं गई और अंत में इसे मानकर इस पर विश्वास नहीं किया गया।

हम याद रखें कि सत्य के वचन को फैलाने के सबसे प्रभावशाली ढंगों में से एक सच्चे गवाहों के द्वारा इसे बताया जाना है। यीशु ने अपने जी उठने के संदेश को दूसरे अनुयायियों तक पहुंचाने के लिए, अपने भरोसेमंद अनुयायियों को चुना। संसार को मिलने वाला सबसे बड़ा संदेश सबसे पहले एक से दूसरे चेले तक आगे पहुंचाने के लिए उसके चेलों के कमज़ोर हाथों में दिया गया। उस भरोसे पर विचार करें जो यीशु आज भी अपने चेलों को देता है!

निष्कर्ष: पवित्र विचार, पवित्र जिज्ञासा और पवित्र प्रतिबद्धता से बढ़कर यीशु के चेलों के लिए और कौन सा गुण आवश्यक हो सकता है? यीशु की सच्चाई का पता लगाने के साथ-साथ उसके वफ़ादार अनुयायी होने के दृढ़ संकल्प के लिए हमारे मन में उसके लिए गहरा सम्मान और गहरी भूख होनी आवश्यक है। यीशु में हमारे प्रतिदिन के जीवन के लिए आदर और सच्चाई की जिज्ञासा और वचनबद्धता की तीन विशेष बातें होनी आवश्यक हैं।

कहा गया है, ''यदि आप किसी विचार को काटना चाहते हैं तो आपको इसे किसी व्यक्ति में पूरा करना आवश्यक है।'' दूसरों को सिखाने के सबसे बढ़िया ढंगों में से एक सही नमूना देकर सिखाना है। पवित्र आत्मा ने हमें इन स्त्रियों के द्वारा चेले होने का असली नमूना दे दिया है। उनके कामों में हम उसके लिए आभार, उसके पास आने और उसके पास से उसके कमीशन को बाहर ले जाने को देखते हैं। शिष्य होने के लिए उससे प्रेम करना, उससे सीखना, उसके लिए जीना और उसके नाम में सेवा करना आवश्यक है।

चेले कब्र पर बनते हैं। आरम्भ से ऐसा ही होता आया है। यदि हमारी इतनी दिलचस्पी है कि

हम अपने आपको कब्र पर ले जाए, तो हम वहीं पर रुके रहना चाहेंगे। इस प्रकार से हम यीशु के बारे में सच्चाई को जान पाएंगे और जो कुछ हमें मिला है जाकर उसे दूसरों को बताने की आज्ञा मिलेगी। आइए कब्र पर जाएं, तब तक वहीं पर रहें जब तक हमें यीशु की सच्चाई की समझ नहीं आ जाती और फिर जो कुछ कब्र पर हुआ उसे दूसरों को बताने का कमीशन लेकर निकलें।

खाली कब्र की घोषणा (16:9-11)

यीशु के पुनरुत्थान पर विचार करते हुए आइए कालक्रमिक ढंग से नये नियम में दिए गए उसके पुनरुत्थान के तथ्यों को इकट्ठा करें। इससे हम उसके पुनरुत्थान की पूरी तस्वीर को देख पाएंगे।

अरिमतिया का यूसुफ़ शुक्रवार शाम को जो यीशु का एक गुप्त चेला और महासभा का सदस्य था पिलातुस के पास जाकर पूछने लगा कि वह यीशु के शव को क्रूस पर से उतारकर इसे दफ़ना सकता है (मरकुस 15:43; यूहन्ना 19:38)। अनोखे ढंग से जो लोग सार्वजनिक रूप में उसके चेले होने से नहीं डरते थे, वे पिलातुस के पास जाकर उसका शव मांगने से डर रहे थे जबकि जो व्यक्ति सार्वजनिक रूप में उसका चेला कहलाने से डरता था उसने उसका शव मांगने का साहस दिखाया। पिलातुस को इस बात का श्रेय जाता है कि उसने यूसुफ़ की विनती मान ली।

निकुदेमुस भी यूसुफ के साथ मिल गया और उसने यीशु के शव को दफ़नाने में उसकी सहायता की। निकुदेमुस एक फरीसी यानी यहूदियों का हाकिम था (यूहन्ना 3:1)। वह दफ़नाने में सहायता के लिए पचास सेर से लगभग मिला हुआ गंधरस और एलवा ले आया (यूहन्ना 19:39)। बड़े प्रेम से इन दोनों ने यीशु के शव को क्रूस पर से उतारकर इसे मलमल की उस चादर में जो यूसुफ़ लेकर आया था, लपेट दिया (मरकुस 15:46)। बाग में यूसुफ़ की एक नई कब्र थी जो क्रूसारोहण के स्थान के निकट थी (मत्ती 27:60; यूहन्ना 19:41)। उन्होंने शव पर लपेटी गई चादर की परतों के अंदर गंधरस और एलवा रखते हुए यीशु के शव को विश्राम के लिए उस कब्र के अंदर रख दिया। इस प्रकार से उन्होंने यीशु का जनाज़ा किया।

यूसुफ़ और निकुदेमुस के पीछे-पीछे महिलाओं की एक टोली भी थी। उन्होंने यीशु के शव को कब्र में रखा जाने पर नज़र रखी और उन्होंने अपने दिमाग में बिठा लिया कि उसे कहां रखा गया है (मरकुस 15:47)। यह जानते हुए कि यीशु के शव को दफ़नाए जाने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं किया गया था, वे अपने घरों को वापस चली गईं और रविवार सुबह को कब्र पर ले जाने के लिए सुगंधित वस्तुएं तैयार कीं। शनिवार को उन्होंने सब्त के सम्बन्ध में मूसा की व्यवस्था को पूरा करने के लिए विश्राम किया (लूका 23:56)। शुक्रवार के अंतिम घण्टों और शनिवार के आरम्भिक घण्टों के दौरान वे सप्ताह के पहले दिन सुबह-सुबह कब्र पर जाने की प्रतीक्षा करती रहीं।

शुक्रवार देर रात या शनिवार सुबह-सुबह, प्रधान याजकों और फरीसियों ने पिलातुस से मिलकर उसके पास एक विशेष विनती की। वास्तव में उन्होंने उससे कहा, ''उस धोखेबाज ने कहा था कि तीन दिनों के बाद वह मुर्दों में से जी उठेगा। हमें डर है कि कहीं उसके मानने वाले आकर उसका शव न चुरा लें और बाद में दावा कर दें कि वह मुर्दों में से जी उठा है। आदेश दो कि कब्र पर मोहर लगाकर उस पर पहरा बिठा दिया जाए'' (देखें मत्ती 27:62-64)।

पिलातुस ने उनसे कहा, ''जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो'' (27:65)। इसलिए इन यहूदियों ने कब्र के मुंह पर मोहर लगवाना निश्चित किया और इसके मुंह पर रोमी पहरेदार चौकसी से पहरा देने लगे (27:66)।

विस्तृत गणना के यहूदी ढंग के अनुसार, मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद तीसरे दिन, स्त्रियों की एक टोली यरूशलेम से कब्र की ओर गई। यह सूर्य के उदय होने से पहले रविवार प्रात: की बात है (मरकुस 16:2[40])। हमें कब्र पर जाने वाली कुछ स्त्रियों के नाम बताए गए हैं: मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, सलोमी और योअन्ना (मरकुस 16:1; लूका 24:10)। वे चाहती थीं कि और परम्परागत बनाए जाने के लिए यीशु के शव पर लेप लगाएं।

रविवार सुबह-सुबह, बिना किसी मनुष्य का ध्यान पड़े, यीशु मुर्दों में से जी उठा था। उस पुनरुत्थान के साथ मेल खाते हुए उस इलाके में भूकम्प आया जिससे कब्र के आस पास का इलाका हिल गया। इन घटनाओं के दौरान यहोवा के एक स्वर्गदूत ने कब्र पर लगाए गए उस पत्थर को लुढ़का दिया (मत्ती 28:2)। पत्थर को लुढ़काने के बाद वह स्वर्गदूत इसके ऊपर बैठ गया, जो परमेश्वर के सम्पूर्ण नियन्त्रण को दिखाता है। स्वर्गदूत का रूप बिजली जैसा और उसका वस्त्र बर्फ के जैसा उजला था। भूकम्प से प्रभावित और स्वर्गदूत को देखकर पहरेदार मुर्दों की तरह नीचे गिर पड़े (मत्ती 28:3, 4)।

यह स्पष्ट है कि परमेश्वर यीशु के चेलों को और हर किसी को जो इसे देखने का इच्छुक हो खाली कब्र दिखाना चाहता था। इसी कारण उसने इसके द्वार पर पत्थर को चमत्कारी ढंग से लुढ़का दिया था। कब्र अब संसार के देखने के लिए खुली थी।

बाद में पहरेदारों में से कुछ लोगों ने जो कुछ हुआ था उसे यरूशलेम में जाकर प्रधान याजकों को सब बता दिया। महासभा के लोग सिपाहियों के पास गए और उन्हें यह कहने पर कि उसके चेले रात को आए और उसका शव चुरा ले गए बहुत बड़ी राशि देने के लिए मान गए यदि (मत्ती 28:11-13)। सिपाहियों ने धन लेकर वही किया जो उन्हें करने को कहा गया था। मत्ती ने लिखा है, ''अत: उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे वैसा ही किया। यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है'' (मत्ती 28:15)।

यह पक्की बात है कि नये नियम के दिल में यीशु का पुनरुत्थान है। मरकुस में क्रूसारोहण का विवरण खाली कब्र की अत्यंत उत्कृष्ट गवाही पर जोर देता है। यह पुष्टि पवित्र शास्त्र के छात्रों को दो गुटों में बांट देती है: विश्वासी जिन्होंने प्रमाण को स्वीकार कर लिया है और दूसरे गैर विश्वासी जिन्होंने ईश्वरीय प्रमाण को नकार दिया है। आइए खाली कब्र की इस गवाही के साथ कि यीशु मुर्दों में से जी उठा, इसकी घोषणा पर ध्यान से विचार करें।

1. खाली कब्र संसार के सामने *ईश्वरीय गवाही* की घोषणा करती है। यह विस्तारपूर्वक बताता है कि यीशु के दावे सच्चे हैं। यीशु को झूठा, ढोंगी और परमेश्वर की निंदा करने वाला कर क्रूस पर चढ़ाया गया था। यदि वह मुर्दों में से जी न उठता तो सारा संसार उसे यह नाम या विवरण देकर सही कर सकता था। उसने मुर्दों में से जी उठने का वादा किया था (मत्ती 16:21); इस वायदे को पूरा न कर पाने पर उसने धोखेबाज़, जालसाज और ढोंगी साबित हो जाना था। उसने परमेश्वर का पुत्र हो जाने का दावा किया (लूका 22:70)। यदि वह मृत्यु पर अपनी सामर्थ को न दिखा पाता तो उसने सचमुच में ढोंगी और परमेश्वर की निंदा करने वाला साबित हो जाना

था। बिना किसी संदेह के, यीशु का मुर्दों में से जी उठना उसके दावों की सबसे बड़ी परख थी।

सुसमाचार के विवरणों में घोषणा की गई है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा! उसका पुनरुत्थान उसके परमेश्वर होने का सबसे बड़ा प्रमाण था। यीशु का पुनरुत्थान मसीहियत की सच्चाई के लिए निर्णायक है। यह वह बुनियादी सच्चाई है जो उसे चेलों को मानना आवश्यक है। यदि वह मुर्दों में से जी उठा तो वह महिमा का प्रभु है; यदि नहीं जी उठा तो वह केवल एक मनुष्य था, जिसमें किसी भी दूसरे मनुष्य से बढ़कर शक्ति नहीं है। ऐसी स्थिति में मसीहियत के विश्वास गलत होने थे। परन्तु खाली कब्र ने यीशु के परमेश्वर होने और उसके दावों की साफ़ साफ़ घोषणा कर दिया। इस दावे के लिए पौलुस ने लिखा, ''यीशु मसीह ... पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (रोमियों 1:1-4)।

2. इसके अलावा खाली कब्र ने पुनरुत्थान की *सार्वजनिक गवाही* दी। परमेश्वर ने इस बात का ध्यान रखा कि खाली कब्र को यीशु के चेले देख पाएं, छू पाएं और आसानी से उसमें जा सकें ताकि वे उसकी हर बात को जांच सकें। उसने इसके खाली होने की हर दरार और सुराख को जांचने का अवसर दिया।

एक भूकम्प और स्वर्गदूत ने यीशु के पुनरुत्थान की सूचना दी: ''और देखो, एक बड़ा भूकंप हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले के समान उज्ज्वल था'' (मत्ती 28:2, 3)। यह स्पष्ट लगता है कि स्वर्गदूत ने कब्र के सामने से पकड़कर यीशु को बाहर निकालने के लिए नहीं हटाया; बल्कि उसने इसे इसलिए लुढ़काया ताकि आदमी अंदर आ सकें।[41] परमेश्वर चाहता था कि मनुष्य कब्र के अंदर आकर खुद देखें कि यीशु सचमुच में जी उठा है।

परमेश्वर ने यीशु के पुनरुत्थान को इतने स्पष्ट ढंग से दिखा ताकि हर कोई जो उसके पुनरुत्थान का प्रमाण चाहता हो उसे अवसर मिल सके। इसी कारण पिन्तेकुस्त वाले दिन पतरास यह कह पाया था, ''परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता'' (प्रेरितों 2:24); ''इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। ... अत: अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:32-36)।

3. कब्र ने हर किसी के सुनने के लिए *एक अनन्त गवाही* की घोषणा की। यीशु से सम्बन्धित परमेश्वर के प्रमाण पूर्ण, सम्पूर्ण और बिल्कुल पुख्ता थे। परमेश्वर कोई भी काम अधूरा नहीं करता। वह हमें लगभग क्षमा नहीं करता, वह लगभग हमारा उद्धार नहीं करता, और उसने यीशु को मुर्दों में से लगभग नहीं जिलाया।

पुनरुत्थान के इस विवरण पर निशान लगा लें:

> जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है-वह बहुत ही बड़ा था। कब्र के भीतर जाकर उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं। उसने उनसे कहा, ''चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर

चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था'' (16:4-6)।

इस दृश्य में तीन प्रकार की गवाही है। पहले यह *शारीरिक* गवाही का पता चलता है। भूकम्प की पृष्ठभूमि के साथ दो स्वर्गदूत नीचे उतरे, उन्होंने कब्र के द्वार पर से बड़े पत्थर को हटा दिया। वह गवाही सांसारिक, दिखाई देने वाली और स्पर्श की जा सकने वाली है। दूसरा, इसमें *स्वर्गीय* गवाही है। स्त्रियां कब्र के अंदर गईं जहां दो स्वर्गदूतों ने उनका स्वागत किया। वास्तव में स्वर्ग से आए उन दूतों ने कहा, ''मैं जानता हूं कि तुम यीशु को ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है। वह जी उठा है। इधर आओ और इस जगह को देखो जहां उसे रखा गया था।'' यह तो ऐसा था जैसे वह कह रहे हों, ''नज़र घुमाओ ओर देखो कि सिवाय कुछ मलमली कपड़ों के कब्र बिल्कुल खाली है।'' परमेश्वर ने इस गवाही पर अपने हस्ताक्षर का ठप्पा लगा दिया। तीसरा, हम अत्याधिक प्रामाणिक *व्यक्गित* गवाही को देखते हैं। स्त्रियों को खाली कब्र में अपने कामों और आवाज़ों के द्वारा पक्का करने की अनुमति दी गई। पवित्र आत्मा ने इस दृश्य की जिसमें वे भाग ले रही थीं, विश्वसनीयता की पुष्टि की। स्वर्गदूतों ने उन्हें छोटी सी कब्र का पूरा दौरा करवा दिया।

ये गवाहियां जिनमें से एक पृथ्वी की, एक स्वर्ग की और एक प्रमाणित मानवीय गवाहों की थी, मिलकर एक सम्पूर्ण गवाही बन गई। इन स्त्रियों के लिए यह एकदम अविश्वसनीय, सुस्पष्ट, स्पर्श किए जा सकने वाली, महसूस हो सकने वाली और अवर्णनीय थी।

निष्कर्ष: यीशु के चेलों के रूप में हमें इसे साफ़-साफ़ कहना आवश्यक है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के पुनरुत्थान का पक्का प्रमाण दिया है। यदि हम नये नियम के प्रमाण को स्वीकार करते हैं तो हमें इस सच्चाई को मानना पड़ेगा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उसके परमेश्वर होने का इनकार हम एक ही सूरत में कर सकते हैं कि हम परमेश्वर के वचन के खरा होने का इनकार करें। बाइबल का लेख हमारे लिए इतना स्पष्ट है कि हम इस प्रमाण का कोई और निष्कर्ष नहीं निकाल सकते।

हमारी अनन्त आशा से जुड़ी कोई भी बात पुनरुत्थान की प्रामाणिकता के साथ ही टिकती या गिर जाती है। 1 कुरिन्थियों 15:14-19 में पौलुस ने ऐसा ही कहा:

> यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। वरन् हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; ... और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।

इन आयतों में पौलुस ने वे सात निष्कर्ष गिनवाए हैं (एक संकेत सहित) जो सच होने थे यदि यीशु मुर्दों में से जी न उठा होता: (1) हमारा प्रचार करना व्यर्थ होना था; (2) हमारा विश्वास व्यर्थ होना था; (3) हमने झूठे गवाह होना था; (4) हमने अभी भी अपने पापों में होना था; (5) जो मसीही सो गए हैं वे भी नष्ट होने थे; (6) हमने अभागे होना था; (7) सुसमाचार के संदेश में हमारा विश्वास व्यर्थ होना था। इन सात निष्कर्षों में मसीही होने का सार है। इसलिए

हमारा सामान्य निष्कर्ष यह होगा कि यदि हम बाइबल पर हमें पुनरुत्थान की सच्चाई देने के लिए भरोसा नहीं कर सकते तो हम जीवन की और बड़ी सच्चाइयों के लिए कोई भी और विश्वसनीय जानकारी देने के लिए बाइबल पर भरोसा नहीं कर सकते।

इस बात पर हम पतरस के साथ हैं। उसने दोहराया, ''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है'' और फिर कहा, ''और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था'' (1 पतरस 1:25; देखें यशायाह 40:8)। इसका अर्थ यह हुआ कि हम मानते हैं कि परमेश्वर का वचन सच्चा, स्थिर रहने वाला और अनन्तकालिक है। इसका यह भी अर्थ हुआ कि परमेश्वर के वचन ने हमें यह विश्वास दिलाया है कि मसीह मुर्दों में से जी उठा। यीशु का पुनरुत्थान हमें यह गारंटी देता है कि उसमें अनन्त जीवन सदा के लिए हमें मिल सकता है।

मसीही व्यक्ति का मिशन (16:14-16)

मरकुस 16:14-16 में यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को दिए अंतिम निर्देशों पर विचार करते हुए (देखें मत्ती 28:18-20), हम प्रभु की सेवकाई की सम्पूर्णता और अपूर्णता दोनों से प्रभावित होते हैं। यीशु संसार में उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए आया जो पिता ने उसे दिया था। अपनी मृत्यु से पहले के गुरुवार की रात, उसका अपने उद्देश्य को पूरा करना इतना निकट था कि वह प्रार्थना में अपने पिता से यह कह पाया, ''जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है'' (यूहन्ना 17:4)। वह अपने पिता का बिल्कुल आज्ञाकार रहा। साथ के साथ हम उस स्पष्ट अधूरेपन को देखते हैं जो हमारा ध्यान खींचता है। यीशु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ यह प्रचार करते हुए किया, ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17)। मोटे तौर पर वह इस संदेश का प्रचार 3-$^1/_2$ वर्षों तक करता रहा। अपनी सेवकाई के अंत के निकट आ जाने पर अभी भी वह राज्य के आने की पेशनगोई कर रहा था (मरकुस 9:1)। अपने प्रेरितों को जैतून पहाड़ पर ले जाकर, जहां उसने पिता के पास ऊपर उठाया जाना था, उसने उन्हें बताया कि कुछ ही दिनों में उन पर पवित्र आत्मा ने उतरना था और उन्हें सामर्थ मिलनी थी (देखें प्रेरितों 1:4, 5)। अपनी स्वयं की पृथ्वी की सेवकाई को सदा के लिए खत्म करते हुए जब यीशु ने अपने प्रेरितों को आशीष दी और बादलों के बीच में से ऊपर उठा लिया गया, तब भी राज्य अभी नहीं आया था। यह जल्द ही आने वाला था, परन्तु अभी तक आया नहीं था।

यीशु की सेवकाई का उद्देश्य क्या था? वह कुछ खत्म करने के लिए नहीं बल्कि कुछ आरम्भ करने के लिए आया था। उसकी सेवकाई ने सबसे बड़ा मिशन तय कर दिया। संसार की सबसे बड़ी घटना यीशु की पृथ्वी की सेवकाई थी। पुराना नियम इसकी प्रतीक्षा करता था और नया नियम इसकी ओर पीछे मुड़कर देखता है। यह बाइबल का दिल है, जिसे ''ग्रेट कमीशन'' कहते हैं।

अपने स्वर्गारोहण से पहले अपने चेलों को अंतिम संदेश देते हुए, यीशु ने उन्हें बताया कि उसके पास सारा अधिकार है और अपने आपको मसीही युग का, जो आरम्भ हो रहा था, नामित अधिकारी बताया। फिर उसने उन्हें आज्ञा दी कि ''सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' (मत्ती 28:19)। उसने यह संकेत भी दिया कि लोगों द्वारा सुसमाचार के संदेश को ग्रहण कर

लिए जाने पर चेलों के लिए विश्वास करने वालों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देना आवश्यक था (मत्ती 28:19)। जिन्हें यह आज्ञा दी गई कि उन्हें इसके बाद, बपतिस्मा लेने वालों को वे सब बातें सिखानी थीं जो यीशु ने उन्हें बताई थीं (मत्ती 28:20)। प्रोत्साहन की अपनी अंतिम बात में, यीशु ने उन्हें बताया कि उनके उसकी आज्ञा को मानने पर उसने उनके साथ और दूसरे सब लोगों के साथ जिन्होंने उसके पीछे आना था ''जगत के अंत तक'' रहना था (मत्ती 28:20)।

यीशु एक मिशन को आरम्भ करने के लिए आया था जिसे उसने प्रेरितों और चेलों को सौंप देना था और फिर उन्होंने इसे अपना मिशन बना लेना था। पिता के पास वापस चला जाने पर यीशु ने पिता के दाहिने हाथ अपने लोगों के बड़े महायाजक के रूप में विनती करने की मध्यस्थता के अपने काम में लग जाना था। उसकी पूरी योजना इस मिशन को जो उसकी सेवकाई से आरम्भ हुआ था, सही समय आने पर अपने प्रेरितों और चेलों के हाथ में दे देने की थी। उसने अपने सब मानने वालों को वह सुसमाचार दे दिया जो उसकी मृत्यु के द्वारा सृजा गया और उसके पुनरुत्थान के द्वारा पक्का किया गया था। इन चेलों ने उसके नाम को पहनकर उसकी कलीसिया बन जाना था। बेशक उसके मिशन की इस घोषणा में हम उस सबसे बड़े लक्ष्य को देखते हैं जो यीशु अपनी कलीसिया को प्रतिदिन पूरा करने को कहता है।

मिशनरी की आवश्यकताएं (16:15-18)

यीशु का पृथ्वी पर का जीवन खत्म हो गया था। उसने सिखाने की अपनी सेवकाई को पूरा कर लिया था। बलिदानी प्रेम के साथ उसने संसार के पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में क्रूस पर अपने आपको दे दिया था। अपने पुनरुत्थान के बाद चालीस दिन तक बहुत से ''पक्के'' (''ठोस''; KJV) प्रमाणों के साथ यह दिखाते हुए कि वह मुर्दों में से जी उठा है, अपने चेलों को दिखाई देता रहा इन चालीस दिनों के दौरान उसने चेलों को आने वाले राज्य के बारे में बताते हुए भी समय बिताया (प्रेरितों 1:3)।

जैतून पहाड़ पर से, अब उसने पिता के पास ऊपर उठाए जाकर, उसके दाहिने हाथ बैठना और अपने राज्य के ऊपर शासन करना आरम्भ कर देना था। परन्तु अपने जाने की एक भूमिका के रूप में उसने अपने प्रेरितों को, और उनके द्वारा अपने सब मानने वालों को अंतिम निर्देश दिए। उसने उस मिशन को जिसे वह अपने चले जाने के बाद उनसे पूरा करवाना चाहता था, बताते हुए उनके हाथ में दे दिया। स्वर्ग के दृष्टिकोण से यह समय की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक है। स्वर्गदूतों ने यीशु को इन अंतिम बातों को करते हुए आनन्द के साथ देखा होगा जिन्हें मानवीय जीव पूरी तरह से नहीं समझ सकते थे। क्रूस पर से कहे गए यीशु के अंतिम शब्दों ''पूरा हुआ'' (यूहन्ना 19:30) का वास्तविक अर्थ थोड़ी देर बाद ही पता चल जाना था।

मरकुस 16:15, 16 में यीशु द्वारा अपने चेलों को दिए गए कमीशन को ''मेरे मिशनरी बनो'' के तीन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है। उसने अपने मिशन को जारी रखने की जिम्मेदारी अपने हर चेले पर डाल दी। यीशु के पकड़वाए जाने से पहले गुरुवार रात को अटारी वाले कमरे में इन लोगों को पहले से बता दिया गया था कि पवित्र आत्मा ने उनका सहायक होना था (यूहन्ना 16:5-15)। उसने उन्हें वह सामर्थ देनी थी जो उनके काम के लिए आवश्यक होनी थी।

इन अंतिम निर्देशों में विस्तृत क्षेत्र था। इनके साथ यीशु के सब चेलों को उसकी सेवा में भर्ती किया जा रहा था। वह सफलतापूर्वक अपने हर चेले को मिशनरी बनने का काम दे रहा था। यीशु ने अपने चेलों को कोई आज्ञा इसे पूरा करने की सामर्थ दिए बिना नहीं देनी थी। उसकी बढ़ती रहने वाली और पूरा करते रहने वाली सामर्थ हमेशा उसके आदेशों के साथ-साथ रही। अपने कमीशन के साथ-साथ उसने अपने चेलों को अपनी सामर्थ और बुद्धि का एक माप दिया। इस संदर्भ में मसीह ने उन कुछ आवश्यक बातों को चिह्नित कर लिया था, जो एक मिशनरी के उसे दिए गए मिशन को पूरा करने के लिए जाने पर आवश्यक हैं।

1. सुसमाचार को सिखाने और प्रचार करने के लिए जाने पर मिशनरी को *दृढ़ विश्वास* की आवश्यकता है। यदि कोई मिशनरी विश्वास में कमज़ोर है, तो सुसमाचार सुनाने के उसके प्रयास कमज़ोर और बेअसर होंगे।

अपने पुनरुत्थान के बाद के दिनों के दौरान, यीशु को प्रेरितों और दूसरे चेलों को प्रमाण को स्वीकार न कर पाने और सचमुच में विश्वास न कर पाने के कारण, डांटना पड़ा था। एक अवसर पर उसके ''उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी'' (मरकुस 16:14)।

बिना विश्वास के या कमज़ोर विश्वास के होने पर कोई वह काम नहीं कर सकता जो यीशु ने उसे करने के लिए दिया था। एक अर्थ में वह किसी काम का नहीं। याकूब ने कहा,

> हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है कि वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या *लाभ*? ... यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या *लाभ*? (याकूब 2:14-16)।

इन आयतों में याकूब ने दो बार ''लाभ'' शब्द का इस्तेमाल किया। यीशु की सेवा में उपयोगी बनने के लिए हमारे अंदर विश्वास का होना आवश्यक है।

जिसमें विश्वास नहीं है वह मिशनरी के रूप में शक्तिहीन है; वह परमेश्वर, मसीह और आत्मा को उसके द्वारा काम नहीं करने दे रहा है। पौलुस ने उस सामर्थ पर जो यीशु में उसके पास थी, आनन्द किया, जब उसने कहा, ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलि. 4:13)। यदि हमारे पास सही बर्तन नहीं है, अर्थात सही मन नहीं है, तो परमेश्वर हमें उस सबसे जो वह देता है, भर नहीं सकता है। विश्वास के होने पर, परमेश्वर पवित्र जन को अपने आत्मिक भण्डार के खज़ाने की चाबी दे देता है। पौलुस ने कहा, ''मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा'' (फिलि. 4:19)।

कोई मिशनरी बिना दृढ़ विश्वास के एक बेकार, शक्तिहीन, और बेजान है। आज्ञाकारी सेवक के लिए कहा जा सकता है, ''क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है'' (फिलि. 2:13)। पौलुस ने भी इस विचार को नकारात्मक रूप में कहा, ''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य, और प्रेम और संयम की आत्मा दी है'' (2 तीमु. 1:7)। लिए सिखाने के अपने

काम ''शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास'' से प्रेम से करना आवश्यक है (1 तीम. 1:5)।

2. मिशनरी के पास *अपरिवर्तनीय संदेश* का होना आवश्यक है। उसे जो यीशु चाहता है कि वह संसार को दिखाए ईमानदारी से उसे समझना चाहिए।

यीशु ने चेलों के अपने समूह को संसार को उसका संदेश देने का आदेश दिया। उसने अपने पवित्र संदेश को हमारे हाथों में दे दिया है। वास्तव में उसने हमें बहुमूल्य मोती यानी एकमात्र सुसमाचार जो संसार का उद्धार कर सकता है, सौंप दिया है। यीशु का यह प्रबन्ध हमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी दे देता है क्योंकि इसमें अनन्त जीवन का सार है। यदि यीशु के चेले संदेश के साथ नहीं चलते तो संसार का नाश है और यदि चेले सही संदेश के साथ नहीं चलते तो संसार के लोग अंधकार में रहेंगे और अंधकार में मरेंगे।

गलातियों 1:8, 9 के शब्दों को हर मिशनरी के दिल पर खुदे हुए होना आवश्यक है।

> परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो।

पौलुस ने न जाने की ''हाय'' को महसूस किया। उसने कहा, ''यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर आए'' (1 कुरि. 9:16)। जैसा कि गलातियों 1:8, 9 से पता चलता है, उसने असली सुसमाचार न सुनाने के लिए ''शापित'' होने को भी महसूस किया।

किसी गम्भीर रोगी की सेवा करने वाले डॉक्टर के लिए जो कुछ वह कहता और करता है उसमें बिल्कुल सही होना आवश्यक है। जीवन और मरण में अंतर करने के लिए रोगी उसी पर निर्भर है। यदि डॉक्टर बेपरवाह है तो वह नाकाम और मृत्यु का सेवक है; यदि उसका दिल, ज्ञान और कौशल सही है, तो वह जीवन का सेवक है। किसी योग्य डॉक्टर से भी बढ़कर एक वास्तविक मिशनरी लोगों का सच्चा सेवक और करुणा का दूत है।

3. मिशनरी की *असंदिग्ध विश्वसनीयता* होनी आवश्यक है। नहीं तो उसके सुनने वाले उसे गम्भीरता से नहीं लेंगे और उसे परमेश्वर के संदेश के प्रामाणिक दूत के रूप में नहीं मानेंगे।

यीशु ने अपने दूतों के लिए विश्वसनीयता दी है, परन्तु हमारे लिए इसे सही ढंग से इस्तेमाल करना आवश्यक है। मरकुस 16:17, 18 में दिखाए गए यीशु के विदाई संदेश में सबसे स्पष्ट प्रतिज्ञाओं में से एक है:

> विश्वासियों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।

यीशु का वादा यह नहीं था कि भविष्य में हर विश्वासी को इन चिह्नों को करने की सामर्थ दी जानी थी। उसने प्रमाणित करने वाले पांच तरह के आश्चर्यकर्म बताए: दुष्टात्माओं को निकालना, नई नई भाषा बोलना, सांपों को उठा लेना, प्राणनाशक वस्तुएं पीना और बीमारों को

चंगा करना। उसका वादा था कि ये आश्चर्यकर्म विश्वासियों ''में'' होने थे। यानी ये आश्चर्यकर्म एक आवश्यक गवाही के रूप में, जो उनकी शिक्षा का भाग होनी थी, उनके साथ-साथ होने थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों तथा दूसरे लोगों का वर्णन है जिन्हें इन आश्चर्यकर्मों को करने के लिए आत्मा के दान दिए गए थे। जिन पांच आश्चर्यकर्मों की बात यीशु ने विशेष तौर पर की, उनमें से चार सबके सामने किए गए थे और पहली सदी के आश्चर्यकर्मों के युग के दौरान आत्मा की प्रेरणा पाए लोगों द्वारा लिख दिए गए। हम मान सकते हैं कि आरम्भिक कलीसिया में प्राणनाशक वस्तु पीने पर जीवित रहने की योग्यता भी देखी गई; जिसका वर्णन प्रेरितों के काम की पुस्तक में नहीं है, क्योंकि यह यीशु की प्रतिज्ञा में शामिल थी। हम यह पक्का माते हैं कि यदि हमें प्रेरितों के सभी कामों और प्रभु की प्रेरणा पाए दूसरे हर सेवक के कामों का पता होता, तो यीशु द्वारा बताए ये चिह्न भी उनमें होने थे।

जब परमेश्वर की प्रेरणा पाए लोगों ने आत्मा का संदेश दिया तो आत्मा के प्रमाणित करने वाले कामों से यह पुष्टि हुई कि वे संदेश परमेश्वर की ओर से थे। आइए फिर से इब्रानियों 2:3, 4 में दी गई सच्चाई को देखते हैं:

> जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

आत्मा के चिह्न झूठे गुरुओं द्वारा दिखा गए किसी भी चिह्न से अलग थे। (1) वे किसी भी देखने वाले के सामने थे। यहां तक कि परमेश्वर के शत्रु भी उनका इनकार नहीं कर सकते थे। (2) वे प्रमाणिक थे। उनसे परमेश्वर की अलौकिक शक्ति दिखाई देती थी जो इस भौतिक संसार से ऊपर है। (3) ये चिह्न केवल परमेश्वर के आत्मा द्वारा दिखाए जा सकते थे। यह पुष्टि करने के लिए कि जो संदेश उन्हें दिया जा रहा था, वह सच था, प्रेरितों के काम में लोगों के पास एकमात्र गवाही ईश्वरीय आश्चर्यकर्मों की थी। हमारे लिए आज उस उच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए नया नियम है। इसमें वे ईश्वरीय आश्चर्यकर्म दर्ज हैं जिनसे यह साबित हुआ कि यीशु के आरम्भिक मिशनरी परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए थे और नये नियम के लेखक पवित्र आत्मा की प्रेरणा पाए हुए थे।

आज जब कोई यह दावा करता है कि वह चमत्कार कर रहा है, तो किसी के लिए भी उसके चमत्कारों को आत्म के उनर वास्तविक चमत्कारों से मिलाकर जो सुसमाचार की पुस्तकों तथा प्रेरितों के काम की पुस्तक में परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए के लिए मिला ले उसे आसानी से असली और नकली में अंतर पता चल जाएगा। परमेश्वर की सामर्थ और मनुष्य की चालाकी में यही अंतर है। परमेश्वर ने अपने संदेश की खराई पर लोगों को विश्वास दिलाने के लिए अदृश्य चिह्नों का इस्तेमाल नहीं किया। सचमुच में दिखाई देने वाले चमत्कार किए गए और उन्हें संसार की एकमात्र सही, आत्मा से भरी पुस्तक में लिख दिया गया। आज भी वे उतने ही विश्वास करने के योग्य हैं जितने तब थे, जब ये दिखाए गए थे।

जब किसी मिशनरी पर उसके संदेश के बारे में सवाल किया जाता है तो अपने सवाल करने वालों को देने के लिए उसके पास प्रमाणित करने वाले चिह्नों का यह समूह है। जो संदेश

वह सुना रहा है उसके परमेश्वर की ओर से होने की पुष्टि हो चुकी है। यीशु आज भी अपने मिशनरियों को सबसे अधिक विश्वसनीयता देकर भेजता है। परन्तु हमें नये नियम की ओर मुड़कर इसका इस्तेमाल करना आवश्यक है। उसके प्रवक्ताओं के रूप में जब हम नये नियम की खराई को साबित कर देने के साथ सात ही हमने पहली सदी के परमेश्वर की प्रेरणा से दिखाए गए आश्चर्यकर्मों के संदेश की विश्वसनीयता भी साबित कर देंगे।

निष्कर्ष: तो फिर कोई मिशनरी प्रभु का काम करने के लिए बाहर कैसे जाए? उसके पास इन आवश्यक बातों का होना आवश्यक है: दृढ़ विश्वास, अटल संदेश और निर्विवाद विश्वसनीयता। इन सबसे लैस होकर वह संसार के किसी भी क्षेत्र में सिखाने और सेवा करने के लिए तैयार है।

हम मिशनरी बनने का निर्णय नहीं करते। यह निर्णय तब जो जाता है जब हम यीशु के सच्चे चेले बनने का आम निर्णय लेते हैं।

यीशु ने हमें इन सुस्पष्ट शब्दों के साथ अपने चेले बनने को बुलाया: ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)। उसके निमन्त्रण के तीन भाग हैं। अपना ''इनकार'' करने का अर्थ मन फिराना; ''उठाने'' का अर्थ आज्ञा मानना है और ''पीछे हो'' लेने का अर्थ वफ़ादार बने रहना है। हमें अपने दिलों में से खुदी को निकालकर अपने दिलों में अपने दिमाग हो हटाकर उसके दिमाग को लगाना है। उसके साथ रहने के लिए उसके साथ प्रतिदिन चलना आवश्यक है।

सुसमाचार की पुस्तकों में से पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को इस बात का पता है कि यीशु पृथ्वी पर क्या था और स्वर्ग में क्या है। वह इस पृथ्वी पर चलने वाला सबसे बड़ा मिशनरी था। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी के लिए भी जो उसके साथ चलता है, स्वाभाविक रूप में उसके साथ चलते रहने के लिए, मिशनरी होना आवश्यक है। मिशनरी डग के बिना चले यीशु के साथ नहीं चला जा सकता।

यीशु ने मसीही युग यानी मानवीय इतिहास का अंतिम युग लाया है। इस तथ्य को मरकुस के सुन्दर अंतिम शब्दों में दिखाया गया है:

> प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन (16:19, 20)।

कलीसिया अर्थात अपनी आत्मिक देह को स्थापित करके और अपने चेलों को मिशनरियों के रूप में अपना सुसमाचार देकर संसार में भेजकर यीशु ने हमें ''अंतिम दिनों'' का यह युग दिया। इस युग में रहने और मसीह के मिशनरी होना हमारे लिए कितने सौभाग्य की बात है!

स्वर्गारोहण का क्या अर्थ (16:19, 20)

पृथ्वी पर अंतिम बार अपने चेलों के साथ बात करने के बाद यीशु ''स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया'' (16:19)। हमारे प्रभु के पिता के पास ऊपर

उठाए जाने की हमें तीन सच्चाइयां पता चलती है जो हमें उसके पीछे चलने के लिए प्रेरित करने वाली होनी चाहिए।

1. *यीशु हमारा प्रेमी उद्धारकर्त्ता है।* उसका ऊपर उठाया जाना मनुष्य के लाभ के लिए है। वह पिता के पास बहुत से अलग-अलग तरीकों में से किसी भी तरीके से वापस जा सकता था, परन्तु उसने दिखाई देने वाले और स्पष्ट ढंग से ऊपर उठाए जाकर अपने चेलों के लिए अपने लगाव को दिखाया। वह लोगों को उसमें विश्वास करने में सहायता करना चाहता था।

2. *यीशु हमारा राज कर रहा प्रभु है।* उसके ऊपर उठाए जाने से उसका अलौकिक होना साबित हो गया था। इस घटना को देखने वालों ने उसे दण्डवत किया और फिर ''बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए; और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे'' (लूका 24:52, 53; देखें मरकुस 16:20)। वह इस योग्य है कि हम उसकी आराधना और सेवा करें। वास्तव में वह ''मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया'' (इब्रा. 3:3) और इस योग्चय है कि ''परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसकी आराधना करें'' (इब्रा. 1:6)।

3. *यीशु हमारा आने वाला न्यायी है।* अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने बताया था कि अंतिम दिन वह संसार का न्याय करेगा (देखें यूहन्ना 12:48)। उसके ऊपर उठाए जाने से उसकी पिछली शिक्षाओं की पुष्टि हो गई।

निष्कर्ष: यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता, प्रभु और न्यायी है इस कारण हमें अपने शेष जीवन में उसकी इच्छा को मान लेना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 28:1; लूका 24:1-3; और यूहन्ना 20:1 में हैं। [2]आम तौर पर इस पर वाद विवाद होता है परन्तु यीशु ने यह सुनिश्चित किया कि चेलों को पता हो कि वह उसी देह में था। यह तथ्य कि लूका 24:31 में ''वह उनकी आंखों से छिप गया'' इस तथ्य का खण्डन नहीं करता; अपने क्रूसारोहण से पहले, अपनी साधारण देह में वह पानी ऊपर चल सकता था। उसके सभी आश्चर्यकर्म प्राकृतिक नियम को ललकारते थे। हम नहीं जानते कि अपने ऊपर उठाए जाने के बाद अब उसकी देह कैसी है। 1 यूहन्ना 3:2 बताता है, ''... अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।'' [3]जो कुछ यूहन्ना ने अपने दर्शन में देखा वह केवल सांकेतिक है (उदाहरण के लिए देखें प्रका. 1:13-16.) [4]समांनातर विवरण मत्ती 28:2-8 और लूका 24:4-8 में हैं। [5]एल. ए. स्टॉफ़र, *मरकुस,* टुथ कॉमैंट्रीज़, गार्डियन ऑफ़ टुथ फ़ाउंडेशन। (बॉलिंग ग्रीन, कैंटकी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1999), 403. [6]इस यूनानी शब्द का अर्थ है, ''भय से सहम जाना,'' ''चेतावनी से रुक जाना'' (जोसेफ़ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962], 655)। [7]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 387. यह बड़ी स्वीकृति नये नियम में मसीह के बताए जाने वाले और सभी आश्चर्यकर्मों को मानने को विवष करती है। [8]''प्रेरित'' (ἀπόστολος, *apostolos*) शब्द बारह के अलावा दूसरे लोगों के सम्बन्ध में मिलता है। याकूब और पौलुस के सम्बन्ध में यह ''कलीसिया का प्रेरित'' यानी भेजने वालों की आशीष और अधिकार के साथ भेजा हुआ के अर्थ में मिलता है। पौलुस ने कहा कि वह ''सब के बाद'' प्रेरित बना (1 कुरि. 15:8)। बरनबास को भी ''कलीसिया का प्रेरित'' कहा जा सकता था क्योंकि उसे अधिकार देकर कलीसिया के दूत के रूप में भेजा गया था। (देखें प्रेरितों 13:2, 3.) [9]यह याकूब या तो प्रभु का भाई था या प्रेरित याकूब। [10]समानांतर विवरण यूहन्ना 20:11-18 में है।

[11]NASB में इस भाग के इर्द-गिर्द कोष्ठक लगाए गए हैं क्योंकि कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह नहीं मिलता है। कोष्ठक 16:20 के अंत में बंद होता है। [12]रोनल्ड जे. कर्नाघन, *मरकुस,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2007), 336. [13]मरियम मगदलीनी के लूका 7:37, 38 वाली ''पापिन'' होने को मानने का एकमात्र कारण यह है कि उस स्त्री के पापपूर्ण अतीत का उल्लेख करने के थोड़ी देर बाद लूका 8:2 में उसका परिचय नाम के साथ करवाया गया है। इस तथ्य का कि वह दुष्टात्मा से ग्रस्त थी, अर्थ यह नहीं है कि मरियम गदलीनी विशेष तौर पर पापिन स्त्री थी। [14]समानांतर विवरण लूका 24:13-35 में है। [15]समानांतर विवरण लूका 24:36-45 और यूहन्ना 20:19, 20 में हैं। [16]समानांतर विवरण मत्ती 28:18-20 और लूका 24:44-49 में हैं। [17]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 763. [18]भेजे जाने के समय प्रेरितों को बताया गया था कि सुसमाचार सुनाने के उनके मिशन में पवित्र आत्मा की मुख्य भूमिका होनी थी (यूहन्ना 20:21-23; प्रेरितों 1:8)। [19]बपतिस्मे को मसीह में होने के साथ जोड़ा जाता है (देखें रोमियों 6:3, 4)। [20]देखें मत्ती 28:20।

[21]परन्तु दानों का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ था; मरकुस के लिखे जाने के समय चिह्न अभी भी हो रहे थे। संसार के बहुत से और लोगों को अभी भी पुष्टि किया हुआ सुसमाचार संदेश मिलना आवश्यक था और नया नियम लिखा जाना अभी पूरा नहीं हुआ था। [22]यानी जिन लोगों में चमत्कारी चिह्न *करने* की योग्यता नहीं थी वे सुसमाचार को बांटने के समय यीशु की ईश्वरीय सामर्थ के प्रमाण के रूप में दिखाए गए उन चिह्नों का *इस्तेमाल* कर सकते थे। आज भी मसीही लोग ऐसा कर सकते हैं। [23]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ 1 कोरिंथियंस,* तीसरा संस्क. (सरसी, आरकैंसा: हार्डिंग कॉलेज, 1989), 166-67. [24]समानांतर विवरण लूका 24:50-53 में है। [25]16:9 से आरम्भ हुआ NASB में कोष्ठक में रखा गया यह भाग कुछ प्राचीन हस्तलेखो में नहीं मिलता। [26]कर्नाघन, 343-44. [27]*दीज़ थिंग्स आर रिटन: बाइबल लिट्रेचर प्रिज़ेंटिंग एट हार्डिंग फ्रॉम 1952 टू 2012* (सरसी, आरकैंसा: टुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल, 2013), 425-26 में देखें जैक पी. लुईस, ''द एंडिंग ऑफ़ मरकुस।'' [28]टेटियन *डायटेसारोन* 55.5-16. [29]इरेनियुस *अगेंस्ट हियरसीस* 3.10.5. [30]यूसबियुस *टू मेरिनुस* 1.1-3.

[31]आर. ए. कोल, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मरकुस: ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 258. [32]कर्ट अलैंड ऐंड बारबरा अलैंड, *द टेक्स्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. एरोल एफ़ रोडस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 287. [33]इस चर्चा का अधिकांश भाग जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री,* अंक 1, मत्ती ऐंड मरकुस (डेस मोइनस: यूजीन एस. स्मिथ, 1875), 377-82 से लिया गया है। [34]हेनरी अल्फोर्ड, *द ग्रीक टैस्टामैंट,* अंक 1, *द फ़ॉर गॉस्पल्स,* संशो. एवरेट एफ़. हैरिसन (शिकागो: मूडी प्रैस, 1958), 438. चाहे अल्फोर्ड ने यह निष्कर्ष निकाला कि हो सकता है कि पुस्तक के इस अंतिम भाग को मरकुस ने न लिखा हो, परन्तु उसने इसे किसी अज्ञात व्यक्ति के ''प्रमाणिक अंश'' के रूप में देखा जिसे बिल्कुल आरम्भ के समय सुसमाचार के पूरा होने के रूप में रखा गया, परन्तु हमारे पास बहुत अधिक कठिन स्वीकृति के साथ आया और हमारी स्वीकृति और सत्कार पर इसके मज़बूत दावे हैं।'' [35]मैक्गार्वे, 380. [36]नील आर. लाइटफुट, *हाउ वी गॉट द बाइबल,* दूसरा संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1988), 74. [37]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 744. [38]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने मरियम को दिए हमारे प्रभु के जवाब को इन शब्दों में लिखा है: ''मुझ पर हाथ मत रख और अपने आपको मुझ से परे रख; मैं अभी ऊपर नहीं गया; यह थोड़ी देर का नहीं बल्कि बीत जाने वाला दर्शन है; मैं अभी संसार में हूं, और थोड़ी देर के लिए रहूंगा, और मुझे देखने के और अवसर आएंगे; इस समय का कर्त्तव्य यह है कि जाकर मेरे दुखी चेलों को बता कि मैं जी उठा हूं और अपने पिता के पास ऊपर उठा लिया जाऊंगा'' (वहीं)। [39]लूका 24:4 कहता है कि दो स्वर्गदूत थे, परन्तु मरकुस के विवरण में केवल एक स्वर्गदूत पर फोकस किया गया है जो बात कर रहा था। [40]यूहन्ना 20:1 से पता चलता है कि मरियम मगदलीनी ''अंधेरा रहते'' पहुंच गई थी।

[41]जॉन मैकआर्थर, जूनियर, *मत्ती 24-28,* द मैकआर्थर न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रेस, 1989), 309.